इख़्लास

और

रियाकारी

मुअल्लिफ़

डा० आज़म बेग क़ादरी

इख़लास और रियाकारी

मुअल्लिफ़

डा० आज़म बेग क़ादरी

9897626182

नाम किताब– इख़्लास और रियाकारी

मुअल्लिफ़– डा० आज़म बेग क़ादरी सफ़वी

इशाअ़त– अप्रेल–2026 (1447) हिजरी

कम्पोज़िंग– अमन & ज़ैनुल आ़बदीन
9897626182
9045442223

ISBN-NO- 978-93-5759-780-7

क़ीमत–150 रुपये

फ़ेहरिस्त मज़ामीन

-: बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम :-

अल्ह़म्दु लिल्लाहि नह्मदुहू व नस्तईनुहू व नस्तग़फ़िरुहु वनुअ़मिनू बिही व नतावक्कलू अ़लैहि व नाऊज़ूबिल्लाहि मिन शुरुरि अ़न फुसिना वमिन सय्यिआति आअ़मलिना मंई युदलिलहु फ़ला हादियालहू वनशहदु अन्ना मुह़म्मदन अ़ब्दुहू व रसूलुहू।

तमाम खूबियाँ और ताअ़रीफ़ें सिर्फ़ अल्लाह तआ़ला के लिये हैं जो तमाम कायनात का एक अकेला मालिक व ख़ालिक़ है कि जिसने अपनी रह़मत और मेहरबानी की चादर से अपने बन्दों को ढाँप रखा है जिसने कायनात की तख़लीक़ो तरतीब को हुस्नो जमाल बख़्शा जो दिलो के पोशीदा राज़ो पर मुत्तलाअ़ है जो तमाम ह़िकमतों व ग़ैबों का जानने वाला है कायनात का कोई ऐसा ज़र्रा नहीं जो उसकी ह़म्द व सना न करता हो और हर शैः उसके ताबेअ़ व क़ब्ज़े कुदरत में है जो अपनी बढ़ाई और बुलन्दी में यकता है

उसका कोई शरीक नहीं जो नेअ़मतें व रिज़्क़ अ़ता करने वाला, हिदायत देने वाला, हिफ़ाज़त करने वाला, बड़ा बख़्शने वाला निहायत मेहरबान व करीम है और जो अव्वल है किसी शैः से उसकी इब्तिदा नहीं हुई वो किसी शैः से मिलकर नहीं बना और वो लाज़वाल है वो हर ऐ़ब से पाक है वो शह रग़ से भी ज़्यादा क़रीब तर है शक्लो सूरत में हर शैः से बईद तर है उसके बन्दों का कोई लम्हा उससे मख़्फ़ी नहीं इंतिहाई तारीक रात में भी ज़मीनो आसमान की जुमला अशिया उससे पोशीदा नहीं, बहुत सी आवाज़ों का जमाअ़ होना उसे-

परेशान व हैरान नहीं कर सकता मुख़्तलिफ़ ज़बानों का सुनना उसको किसी एक से मशगूल नहीं करता और जो बग़ैर आज़ा के सबकी सुनता है और वो कायनात की हर शैः का अ़ालिम है और वो हय्युल क़य्यूम ज़ात है तमाम आसमान व ज़मीन पर उसी की बादशाहत है और वो अ़र्शे अ़ज़ीम का मालिक है।

दुरुदो सलाम हो रहमते दो अ़ालम (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) पर जो ज़ाहिर व बातिन में तय्यब व ताहिर हैं जो तमाम ऐबो नक़ाइस से पाक उ़लूमे ग़ैब के जानने वाले हैं जिन्हें अल्लाह तअ़ाला ने नूर व हिदायत के साथ मबऊ़स फ़रमाया जिनके नूर से दो अ़ालम में उजाला है जिन्होंने इन्सान को गुमराहियों के अंधेरों से निकालकर राहे हिदायत और राहे निजात दिखाई अल्लाह तअ़ाला ने जिन्हें कौसर अ़ता की जिस पर क़यामत के दिन प्यासे मोमिन आयेंगे और सैराब होकर जायेंगे और अल्लाह तअ़ाला ने अपने हबीब को औसाफ़ो अख़लाक़ में बुलन्द और बे मिस्ल और तमाम अम्बियाकिराम अ़लैहिमुस्सलाम का सरदार बनाया और अपने नूर से हुजूरे पाक के जिस्मे अत्हर को तख़लीक़ किया जिनका ज़ाहिर व बातिन सब नूर है।

अल्लाह तअ़ाला की बेशुमार रहमत व सलामती हो अह्ले बैत अत्हार पर जो दीन की हिफ़ाज़त और बक़ा के लिये कुरबान हो गये जो क़यामत के दिन मुहिब्बाने अह्ले बैत की निजात का ज़रिया होंगे और हर आफ़तो मुसीबत के दरमियान ढाल होंगे और रहमत व सलामती हो आपकी अज़वाजे मुताह्रात और आपकी आल व असहाब और जुमला औलिया किराम व सूफ़िया इ़ज़ाम और उन पर जो अल्लाह के मुक़र्रब मख़सूस बन्दे हैं।

-: तम्हीद :-

रियाकारी एक ऐसा ख़तरनाक बातिनी मर्ज़ और गुनाह और शिर्के असग़र है कि जिसकी जितनी मज़म्मत की जाये उतनी कम है आज इस दौर में अक्सर लोग इस बीमारी में मुब्तिला हैं लोगों पर फ़ानी दुनिया व मताअ़े दुनिया की मुहब्बत इस क़दर ग़ालिब आ चुकी है कि वो दीन इस्लाम और उसके शरअ़ई अहकाम से ग़ाफ़िल और बेपर'वाह और दीनी उ़लूम से क़ता तअ़ाल्लुक़ हैं और उनके जुमला आअ़माल महज़ दुनिया और दुनिया वालों को दिखाने के लिये ही अन्जाम पाते हैं और वो अपनी दुनियावी ज़िन्दगी को ही अपनी हक़ीक़ी ज़िन्दगी समझ बैठे हैं और अपनी आख़िरत के बारे में उनका ईमान व अ़क़ीदा ख़्वाब के मिस्ल तसव्वुरात के अंधेरों में गुम है और वो जो भी इ़बादत व नेक अ़मल करते है तो ख़ालिस अल्लाह तअ़ाला की रिज़ा व खुशनूदी हासिल करने के लिये नहीं करते हैं बल्कि वो अपनी जुमला इ़बादात व नेक आअ़माल लोगों को दिखाने के लिये करते हैं ताकि लोग उनकी इ़बादत व नेक अ़मल को देखकर उनकी ताअ़रीफ़ व तौसीफ़ और ताअ़ज़ीम व तकरीम करें और उनके अ़मल की शोहरत व चर्चा हो ताकि उनके दिलों को सुकून व इत्मीनान और नफ़्स को राहत व मसर्रत हासिल हो

जो लोग अपनी नेकियों में रियाकारी (दिखावा) करते हैं वो अपनी पूरी ज़िन्दगी की नेकियों को ज़ाए (बर्बाद) कर लेते हैं और उन्हें अपनी नेकियों का कोई अज्र व सवाब नहीं मिलता हालांकि रियाकार लोग अपनी जुमला नेकियों को अपने नामा-ए-आअ़माल में शुमार करते हैं

कि मैंने इतनी नमाज़ें पढ़ीं इतने रोज़े रखे और हज व उ़म्राह किया ज़कात अदा की, और सद्क़ात व ख़ैरात और मुस्तहक़ीन के हुक़ूक़ अदा किये जो उनके ज़िम्मे थे और अम्र बिल माअ़रुफ़ का फ़रीज़ा अन्जाम दिया और दीगर बेशुमार नेक आअ़माल किये इन सब का अल्लाह तआ़ला हमें अज्रो सवाब अ़ता फ़रमायेगा और वो इस उम्मीद में ज़िन्दगी गुज़ारते हैं मगर नेकियों में रियाकारी के सबब उनके तमाम आअ़माल बातिल और ज़ाए हो जाते हैं और अज्रो सवाब के नाम पर उनके हाथ कुछ भी नहीं आता सिवाए गुनाहों के और उन्हें उनकी रियाकारी व गुनाहों के सबब आख़िरत में सख़्त तरीन अ़ज़ाब दिया जायेगा और उनके जुमला आअ़माल उनके किसी काम नहीं आयेंगे न उन्हें क़ब्र के अ़ज़ाब से बचायेंगे और न ही क़यामत के अ़ज़ाब और उसकी हौलनाकियों बचायेंगे और न दोज़ख़ के दर्दनाक अ़ज़ाब से बचायेंगे बल्कि वो दोज़ख़ ईधन बनेंगे और उनकी मेहनतो मशक़्क़त जो उन्होंने ने नेक आअ़माल करने में सर्फ़ की और सदक़ात, ख़ैरात में जो माल सर्फ़ किया वो सब का सब अकारत और बर्बाद हो जाता है और उन्हें कोई नफ़अ़ व सिला और बदला नहीं मिलेगा

बग़ैर इख़लास के कोई भी नेक अ़मल बारगाहे खुदा वन्दी में शरफ़े मक़बूलियत नहीं पाता और जिस अ़मल में ज़र्रा बराबर भी दिखावा व शोहरत शामिल हो तो वो अ़मल बेकार, बेफ़ायदा और बातिल है इन्सानों पर उनके नफ़्स का इस क़दर ग़लबा है कि जब तक उनके नफ़्स को राहत व दिल को चैन व सुकून नहीं मिलता जब तक कि वो अपनी नेकियाँ लोगों को दिखा न लें जबकि दुनियावी उमूर में तो वो दिखावा करतें हैं कम अज़ कम वो अपनी नेकियों को तो लोगों को न दिखायें

अगर दिखाना ही मक़्सूद हो तो अपने रब को दिखायें ताकि उसकी रिज़ा व खुशनूदी पायें और अज्रो सवाब के मुस्तहिक़ बने लोंगों को दिखाने से क्या फ़ायदा जो तुम्हें कोई अज्रो सवाब या बदला नहीं दे सकते और न ही तुम्हें अल्लाह के ग़ज़ब व उसके अ़ज़ाब से बचा सकते हैं क्या इतनी सी बात समझ में नहीं आती जब कोई नेक अ़मल करता है तो उसके नफ़्स में शैतान ये ख़्वाहिश पैदा करता है कि वो अपने अ़मल को लोगों को दिखाये ताकि उसके अ़मल की शोहरत और चर्चा हो और लोग उसकी ताअ़रीफ़ और वाहवाही करें और उसकी ताअ़ज़ीमो तकरीम में इज़ाफ़ा हो और उसका मक़ाम व मर्तबा और ज़्यादा बुलन्द हो और इस तरह उसके अन्दर रिया कब दाख़िल हो जाती है उसे पता भी नहीं चलता और इस तरह वो अपने नेक अ़मल को बर्बाद कर लेता है और उसे गुनाह और ख़सारे के सिवा कुछ भी हासिल नहीं होता

और इसकी एक वजह ये भी है कि आज इस दौर में दीनी उ़लूम सीखने की रग़बत न रही और माल व दौलत को ज़्यादा से ज़्यादा हासिल करने और अपनी ज़िन्दगी को बेहतर बनाने के लिये वक़्त और पैसा भी ख़र्च करते और तरह तरह के दुनियावी उ़लूम सीखतें हैं काश अगर लोगों के पास रियाकारी और इख़लास से मुताअ़ल्लिक़ इल्म होता तो वो जानते कि किसी नेक अ़मल में दिखावा करना अ़ज़ीम गुनाह और शिर्के ख़फ़ी और रिया (दिखावा) करने के सबब दोज़ख़ में मिलने वाला सख़्त अ़ज़ाब और अज्रो सबाव से महरुमी है।

फ़क़ीर

डा० आज़म बेग क़ादरी सफ़वी

9897626182

जिस अ़मल की नीयत में इख़लास हो तो बेहतर अज्र की बिशारत

हर नीयत पोशीदा होती है और अ़मल ज़ाहिर होता है और लोग ज़ाहिर देखते हैं और अल्लाह तअ़ाला बन्दे का बातिन देखता है इसलिये हर अच्छे अ़मल के लिये अच्छी नीयत और उसमें इख़लास का होना निहायत ही ज़रुरी है क्योंकि जिस अ़मल में जैसी नीयत होगी वैसा ही उस अ़मल का सिला (बदला) और अज्र मिलता है अगर किसी अ़मल की नीयत में रिया (दिखावा) हो तो वो अ़मल बातिल और ज़ाए (बर्बाद) हो जाता है और बारगाहे खुदा वन्दी में वो शरफ़े मक़्बूलियत नहीं पाता बल्कि रद्द कर दिया जाता है और जिस अ़मल की नीयत में इख़लास हो यानी हर वो अ़मल जो अल्लाह तअ़ाला की रिज़ा व खुशनूदी हासिल करने और अज्रो सवाब पाने की नीयत से किया जाये और उसमें ज़र्रा बराबर भी रिया (दिखावा) न हो तो वो अ़मल बारगाहे खुदा वन्दी में कुबूल होता है और अल्लाह तअ़ाला उस अ़मल का कई गुना अज्रो सवाब अ़ता फ़रमाता है।

इरशादे बारी तअ़ाला हैः–

अगर तुम अल्लाह को (इख़लास और नेक नीयती से) अच्छा क़र्ज़ दोगे तो वो उसे तुम्हारे लिये कई गुना बढ़ा देगा और तुम्हें बख़्श देगा और अल्लाह तअ़ाला बड़ा क़द्रदान, बड़ा बुर्दबार है वो हर पोशीदा व ज़ाहिर का जानने वाला, सब पर ग़ालिब बड़े इक़्तिदार का मालिक और बड़ी हिकमत वाला है। (सूरह–तग़ाबुन–64/17, 18)

मज़कूरा आयते करीमा का खुलासा ये है कि अगर तुम

इख़्लास और नेक नीयती से फुक़रा व मसाक़ीन और मुस्तहक़ीन को अपने माल से सद्क़ा दोगे तो अल्लाह तअ़ाला उसे तुम्हारे लिये कई गुना बढ़ा देगा और तुम्हें बख़्श देगा यानी अ़मल में इख़्लास और नेक नीयती की वजह से कई गुना अज्र भी मिलेगा और जिस माल से सद्क़ा दिया गया तो अल्लाह तअ़ाला उसमें मज़ीद बरकत अ़ता फ़रमायेगा और इन सब से बढ़कर नीयत में इख़्लास होने की वजह से उसके गुनाह मुआ़फ़ कर दिये जाते और उसकी बख़्शिश कर दी जाती है और अल्लाह तअ़ाला तुम्हारे तमाम आअ़माल व इख़्लास से बाख़बर है और उसके ख़ज़ाने में किसी चीज़ की कोई कमी नहीं है और वो हर पोशीदा व ज़ाहिर का जानने वाला सब पर ग़ालिब बड़े इक़्तिदार का मालिक और बड़ी हिकमत वाला है।

इरशादे बारी तअ़ाला हैः-
जो लोग अल्लाह तअ़ाला की राह में अपना माल ख़र्च करते हैं उनकी मिसाल (उस) दाने की सी है जिससे सात बालियाँ उगें (और फिर) हर बाली में सौ दाने हों (यानी सात सौ गुना वो अज्र पाते हैं) और अल्लाह तअ़ाला जिसके लिये चाहता है (तो इससे भी ज़्यादा) इज़ाफ़ा फरमाता है और अल्लाह तअ़ाला बड़ी वुसअ़त वाला खूब जानने वाला है। (सूरह-बक़राह-2/261)

जो लोग सिर्फ़ अल्लाह तअ़ाला की रिज़ा व खुशनूदी हासिल करने की ग़रज़ से इख़्लास के साथ अल्लाह तअ़ाला की राह में ख़र्च करते हैं जिसमें ज़र्रा बराबर भी रिया (दिखावा) न हो तो उनकी फ़ज़ीलत मज़कूरा बाला आयत में एक मिसाल के ज़रिये बयान की गई है कि ऐसे शख़्स के अज्रो सवाब की मिसाल ऐसी है कि

जैसे उसने बीज का एक दाना ज़मीन में बोया तो उस एक दाने से सात बालियाँ उगीं और और हर बाली में सौ दाने पैदा हुये याअ़नी एक बीज से 700 दाने पैदा हुये ग़रज़ ये कि जो शख़्स ख़ालिस अल्लाह तआ़ला के लिये राहे खुदा में ख़र्च करता है तो अल्लाह तआ़ला उसे अज्रो सवाब की सूरत में एक के बदले 700 गुना अ़ता फ़रमाता है बशर्ते ये कि उसमें दिखावा शामिल न हो और उसके माल में मज़ीद बरकत अ़ता फ़रमाता है और इस आयत में राहे खुदा में ख़र्च करने से मुराद हर क़िस्म के सद्क़ात व ख़ैरात मुराद हैं मसलन दीनी उमूर में ख़र्च करना फुक़रा, मसाकीन और मोहताज व यतीम की माली इमदाद करना और मस्जिद व मदरसे और किसी कारे ख़ैर में ख़र्च करना और जिहाद फ़ी-सबीलिल्लाह में ख़र्च करना वग़ैराह।

इरशादे बारी तआ़ला हैः-

जो कोई एक नेकी लायेगा तो उसके लिये बतौरे अज्र उस जैसी दस नेकियाँ हैं और जो कोई भी एक गुनाह लायेगा तो उसको उस जैसे एक (गुनाह) के सिवा सज़ा नहीं दी जायेगी और वो जुल्म नहीं किये जायेंगे।
(सूरह-अनआ़म-6/160)

किसी नेकी का अज्र दस गुना और किसी नेकी का अज्र सात सौ गुना व किसी नेकी का अज्र बे हिसाब मिलता है अज्रो सवाब के ये मदारिज का फ़र्क़ नीयत और इख़लास के मदारिज के ऐतबार से है जिस शख़्स में जितना ज़्यादा इख़लास होगा तो उसको उतना ज़्यादा अज्र मिलता है और अल्लाह तआ़ला ने लोगों को उन की नेकियों पर अज्र व सवाब देने की कोई इन्तिहाई हद व मिक़दार मुक़र्रर नहीं फ़रमाई बल्कि ये अल्लाह-

तआ़ला की मर्ज़ी पर मुन्हसिर है कि अल्लाह तआ़ला जिसको जितना चाहे उसको उतना अज्रो सवाब अ़ता फ़रमाता है वो चाहे तो किसी नेकी का अज्र दस गुना और किसी नेकी का अज्र सात सौ गुना और जिसके लिये चाहे लाखों करोड़ों गुना अज्र अ़ता फ़रमाता है और अल्लाह तआ़ला का हम सब मुसलमानों पर बड़ा अ़ज़ीम एहसान और फ़ज़्ल है कि जब कोई बन्दा सिर्फ़ नेकी का इरादा करे तो उसके इरादा करने पर ही उस के नामा-ए-आअ़माल में एक नेकी लिख दी जाती है और जब बन्दा किसी गुनाह का इरादा करे तो उसके नामाए आअ़माल में गुनाह नहीं लिखा जाता जब तक कि वो गुनाह उससे सादिर न हो जाये जिसका उसने इरादा किया था और उसके गुनाह करने पर एक गुनाह की ही सज़ा दी जायेगी।

➡ हज़रत अबू ज़र रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से मरवी है कि हुजूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है कि जो एक नेकी लायेगा तो उसे दस गुना या उस से ज़ायद अज्र मिलेगा और जो बुराई लेकर आयेगा उसको सिर्फ़ उसी की मिस्ल बुराई की सज़ा मिलेगी या मैं उसको बख़्श दूँगा और जो एक बालिस्त मेरे क़रीब होता है तो मैं उसके एक हाथ क़रीब होता हूँ और जो मेरे एक हाथ क़रीब होता है मैं उसके चार हाथ क़रीब होता हूँ जो मेरे पास चलकर आता है मैं दौड़कर उस के पास जाता हूँ और जो रुये ज़मीन के बराबर गुनाह लेकर मेरे पास आये अगर उसने मेरे साथ किसी को शरीक न किया हो तो मैं उतनी ही मग़फ़िरत के साथ उससे मुलाक़ात करूँगा (मुस्लिम-सहीह-5/167-ह०-6833) (इब्ने माजा-सुनन-3/222-ह०-3821)

आअ़माल का दारो मदार बन्दे की नीयत पर मौक़ूफ़ होता है

➡ हज़रत ऊ़मर बिन ख़त्ताब रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है कि रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि बिला शुबा आअ़माल का मदार नीयतों पर है और हर शख़्स को उसकी नीयतों के मुताबिक़ ही फल मिलेगा फिर जिस शख़्स की नीयत हिजरत करते वक़्त अल्लाह व उसके रसूल (की रज़ामन्दी और हुक्म की ताअ़मील) के लिये होगी तो उसकी हिजरत अल्लाह और उसके रसूल के लिये ही समझी जायेगी लेकिन जिस शख़्स की हिजरत का मक़सद दुनिया कमाने या किसी औ़रत से निकाह करने वग़ैराह के लिये वतन छोड़ा तो उसकी हिजरत उसी काम के लिये समझी जायेगी जिसके लिये उसने हिजरत की होगी। (बुख़ारी–सहीह–1/67–ह०-01, 54)
(मुस्लिम–सहीह–3/775–ह०-4927)
(इब्ने माजा–सुनन–3/379–ह०-4227)
(तिर्मिज़ी–सुनन–1/907–ह०-1647)
(अबू दाऊद–सुनन–2/683–ह०-2201)
(नसाई–सुनन–5/571–ह०-3825)
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–5/297–ह०-6837)
(कंजुल ऊ़म्माल–2/208–ह०-7236, 7272)

मोमिन की नीयत उसके अ़मल से बेहतर होती है

➡ हज़रत सह्ल बिन साअ़द रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से मर‘वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि

व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया मोमिन की नीयत उस के अ़मल से बेहतर होती है और मुनाफ़िक़ का अ़मल उसकी नीयत से बेहतर होता है और मोमिन जब कोई (नेक नीयत व इख़लास के साथ) नेक अ़मल करता है तो उसके दिल में एक नूर जल जाता है एक रिवायत में इतना इज़ाफ़ा है कि नीयत आअ़माल के इख़लास की जगह है और आअ़माल रिया और खुद पसन्दी के मुक़ाबले के लिये हैं।
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–6/185–ह०-5942)
(कंज़ुल उ़म्माल–2/206–ह०-7236)
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–5/330–ह०-6860)
(देलमी–अल फ़िरदौस–3/45–ह०-6842)

लोगों का हश्र उनकी नीयतों पर होगा

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया लोगों का हश्र उनकी नीयतों पर होगा।
(इब्ने माजा–सुनन–3/380–ह०-4229)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला क़यामत के दिन लोगों को उनकी नीयतों के मुताबिक़ क़ब्रों से उठायेगा। (अत्तरग़ीब वत्तरहीब–1/70–ह०-08)
(कंज़ुल उ़म्माल–2/206–ह०-7242)

➡ हज़रत उ़मर बिन ख़त्ताब रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है कि रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला–

अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि अगर कोई शख़्स दिन में रोज़ा रखे और पूरी रात नमाज़ पढ़े तो अल्लाह तअ़ाला उसे उसकी नीयत के मुताबिक़ उठायेगा या जन्नत की तरफ़ या दोज़ख़ की जानिब।
(कंजुल उ़म्माल–2/208–ह०-7267)

नेक नीयत पर अ़मल से ज़्यादा सवाब

➡ हज़रत अबू मूसा (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि मोमिन की नीयत उसके अ़मल से बेहतर होती है अल्लाह तअ़ाला बन्दे को उसकी नेक नीयत पर इतना अज्र अ़ता फ़रमाता है जितना अज्र अ़मल पर नहीं देता क्योंकि नीयत में रिया नहीं होती और अ़मल में रिया के मिल जाने का ख़दशा होता है। (कंजुल उ़म्माल–2/208–ह०-7270)

–: नेकी करने की नीयत पर सवाब :–

अ़मल की दुरस्तगी व ख़राबी नीयत की दुरस्तगी व ख़राबी पर मौक़ूफ़ होती है और मुख़लिस जिस अ़मल की नीयत करे वो उसके नामे आअ़माल में लिख दिया जाता है और उसे उसका अज्र भी मिलता है ख़्वाह वो किसी उज्र की वजह से वो अ़मल न कर सके मसलन वो बीमार हो जाये या सो जाये या हालते सफ़र में हो उसकी नीयत में इख़लास के सबब उसके अ़मल को लिखा जाता है यहाँ तक कि उसके नेक अ़मल करने की नीयत और इरादे पर ही उसके नामा–ए–आअ़माल में एक नेकी लिख दी जाती है अगरचा वो उस अ़मल को अन्जाम न दे सके।

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला का इरशादे गिरामी है ऐ फ़रिश्तो जब मेरा बन्दा किसी बुराई का इरादा करे तो जब तक वो उस पर अ़मल न करे तो उसका गुनाह न लिखो और अगर वो उसके मुताबिक़ अ़मल करे तो फिर उसके बराबर गुनाह लिखो और अगर वो मेरे ख़ौफ़ से उस बुराई को तर्क करदे तो उसके लिये एक नेकी लिखो और अगर कोई बन्दा नेक अ़मल का इरादा करे तो उसके इरादे पर ही एक नेकी लिख दो और अगर वो उस पर अ़मल करे दस गुना से सात सौ गुना तक नेकी लिखो।
(बुख़ारी–सहीह–6/620–ह०-7501, 6491)
(मुस्लिम–सहीह–1/231–ह०-337, 338)
(अत्तरग़ीब वत्तरहीब–1/72–ह०-11)
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–5/303–ह०-6860)

➡ हज़रत अबू दरदा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जो शख़्स बिस्तर पर लेटते वक़्त ये नीयत रखता हो कि रात को नमाज़े तहज्जुद के लिये उठेगा लेकिन उसे गहरी नींद आ गई और वो सुबह तक सोता ही रहा तो उसके लिये उस नमाज़ का अज्र लिखा जायेगा जिसकी उसने नीयत की थी और उसकी नींद उसके रब की तरफ़ से नवाज़िश होगी। (नसाई–सुनन–3/553–ह०-1788)
(इब्ने माजा–सुनन–1/455–ह०-1344)

➡ उम्मुल मुमिनीन हज़रत आयशा सिद्दीक़ा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) से मर'वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु

तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जो शख़्स रात को नमाज़ अदा करता हो मगर किसी रात उस पर नींद ग़ालिब आ जाये तो उसके लिये उसकी नमाज़ का अज्र लिख दिया जाता है और नींद उसके लिये सद्क़ा होती है।
(अबू दाऊद–सुनन–2/69–ह०-1314)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जिसने वुज़ू किया और अच्छी तरह वुज़ू किया याअ़नी उसने सुन्नत के मुताबिक़ कामिल वुज़ू किया फिर मस्जिद की तरफ़ गया मगर लोगों को पाया कि वो नमाज़ से फ़ारिग़ हो चुके हैं तो अल्लाह तआ़ला ऐसे बन्दे को भी उतना अज्र अ़ता फ़रमाता है जितना कि उसको जिसने जमाअ़त में हाज़िर होकर नमाज़ पढ़ी हो।
(अबू दाऊद–सुनन–1/453–ह०-564)

➡ हज़रत अबू मूसा अशअ़री रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जब आदमी बीमार होता है या सफ़र करता है तो वो जिस क़दर इ़बादात बाहालते सेहत में करता था उसके लिये वो सब लिखी जाती हैं। (बुख़ारी–सहीह–3/317–ह०-2996)

➡ हज़रत अनस (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर‘वी है कि हुज़ूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) एक लड़ाई (तबूक में) शरीक थे तो आपने फ़रमाया कि कुछ लोग मदीना तय्यबा में हमारे पीछे रह गये हैं मगर हम लोग जिस घाटी या मैदान में

जायेंगे या हम अल्लाह तआ़ला की राह में जो भी ख़र्च करेंगे तो वो अज्र व सवाब में ज़रुर हमारे साथ होंगे सहाबा किराम ने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह वो हमारे साथ किस तरह अज्र व सवाब पायेंगे हालांकि वो तो मदीना तय्यबा में हैं आपने फ़रमाया उज्र और मजबूरी ने उन्हें रोक रखा है।

(बुख़ारी–सहीह–3/240–ह०-2839)
(अबू दाऊद–सुनन–3/62–ह०-2508)
(अत्तरग़ीब वत्तरहीब–1/70–ह०-07)
(कंजुल उ़म्माल–2/207–ह०-7262, 7264)

➡ हज़रत अबू क़ब्शा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया सद्क़ा देने से माल कम नहीं होता और मज़लूम जब ज़ुल्म पर सब्र करता तो अल्लाह तबारक व तआ़ला उसकी इ़ज़्ज़त को बढ़ा देता है और जब कोई सुवाल का दर‘वाज़ा खोल देता है तो अल्लाह तआ़ला उस पर मोहताजी का दर‘वाज़ा खोल देता है नीज़ फ़रमाया कि इस उम्मत के लोगों की मिसाल चार शख़्सों की तरह है एक वो शख़्स जिसको अल्लाह तआ़ला ने माल व इ़ल्म दिया और वो अपने इ़ल्म के मुवाफ़िक़ अपने माल में अ़मल करता है और अपने हक़ में ख़र्च करता है दूसरा वो शख़्स कि जिस को अल्लाह तआ़ला ने इ़ल्म दिया मगर माल नहीं दिया वो कहता है कि अगर मुझको माल मिलता तो मैं भी पहले शख़्स की तरह ही उस पर अ़मल करता आपने फ़रमाया ये दोंनों शख़्स सबाब में बराबर हैं तीसरा वो शख़्स कि जिसको अल्लाह तआ़ला ने माल दिया मगर इ़ल्म नहीं दिया और वो अपने माल को बेहूदा कामों में ख़र्च करता है चौथा वो शख़्स जिसको अल्लाह तआ़ला

ने न इ़ल्म दिया न माल वो कहता है अगर मेरे पास माल होता तो मैं तीसरे शख़्स की तरह उसको ख़र्च कर डालता। (इब्ने माजा–सुनन–3/380–ह०-4228)
(तिर्मिज़ी–सुनन–उ़र्दू–2/98–ह०-205)
(तिर्मिज़ी–सुनन–अ़रबी–2/525–ह०-2325)

–: क़ातिल व मक़्तूल दोंनों दोज़ख़ी :–

➡ हज़रत अनस और हज़रत अबू मूसा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) से रिवायत है रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जब दो मुसलमान तलवारों के साथ आपस में लड़ें तो क़ातिल व मक़्तूल दोनों दोज़ख़ी हैं आपसे अ़र्ज़ किया गया ऐ अल्लाह के रसूल क़ातिल के मुताअ़ल्लिक़ तो दुरस्त है मगर मक़्तूल दोज़ख़ी क्यों तो आपने फ़रमाया क्योंकि उसकी भी ख़्वाहिश और नीयत दूसरे साथी को क़त्ल करने की थी।
(बुख़ारी–सहीह–1/96–ह०-31)
(मुस्लिम–सहीह–5/389–ह०-7252)
(इब्ने माजा–सुनन–3/284–ह०-3963, 3964)

–: अच्छी नीयत जन्नत में ले जायेगी :–

➡ हज़रत जाबिर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर‘वी है कि हुज़ूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि अच्छी नीयत अपने मालिक को जन्नत में ले जायेगी और अच्छे अख़लाक़ अपने मौसूफ़ को जन्नत में ले जायेंगे व अच्छा पड़ोसी अपने पड़ोसी को जन्नत में ले जायेगा।
(कंज़ुल उ़म्माल–2/206–ह०-7248, 7259)

नेक नीयत के सबब अ़मल थोड़ा और अज्र ज़्यादा

➡ हज़रत बरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर‘वी है कि हुजूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) के पास एक शख़्स आया जो ज़िराह पहने हुये था उसने अ़र्ज़ किया ऐ अल्लाह के रसूल मैं पहले जंग लड़ूँ या इस्लाम ले आऊँ आपने फ़रमाया कि पहले इस्लाम लाओ फिर जंग लड़ो चुनांचा वो पहले इस्लाम ले आया और उसके बाद जंग में शरीक हुआ फिर शहीद हो गया तो रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया उसने अ़मल थोड़ा किया मगर अज्र ज़्यादा पाया।
(बुख़ारी–सहीह–3/225–ह०-2808)
(मुस्लिम–सहीह–3/767–ह०-4914)

➡ हज़रत जरीर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर‘वी है एक शख़्स आया और इस्लाम के हल्क़े में दाख़िल हो गया हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) उसे अहकामे इस्लाम सिखाते थे एक मर्तबा वो सफ़र पर जा रहा था कि उसके ऊँट का खुर एक जंगली चूहे के बिल में दाख़िल हो गया उसके ऊँट ने उसे ज़ोर से नीचे फेंका जिससे उसकी गर्दन टूट गई और वो फ़ौत हो गया फिर हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) की ख़िदमत में उसका जनाज़ा लाया गया तो आपने फ़रमाया उसने अ़मल थोड़ा किया मगर अज्र ज़्यादा पाया। (मुस्नद अहमद–8/372–ह०-19371)

➡ हज़रत साअ़द बिन अबी वक़्क़ास रज़िअल्लाहु तआ़ला

अ़न्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम ने फ़रमाया कि तुम जो भी ख़र्च करते हो कि जिससे तुम्हारा मक़सद रज़ाए इलाही हो तो तुम्हें उस पर अज्र दिया जायेगा यहाँ तक कि तुम अपनी बीवी के मुँह में जो लुक्मा डालते हो तो उस पर भी तुम्हें अज्र दिया जाता है।
(बुख़ारी–सहीह–1/112–ह०-56)
(बैहक़ी–सुनन कुबरा–4/602–ह०-6555)

अल्लाह तआ़ला जिस्म व सूरत नहीं बल्कि बन्दों की नीयतों को देखता

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर'वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया बेशक अल्लाह तआ़ला तुम्हारे जिस्मों व तुम्हारी सूरतों को नहीं देखता बल्कि वो तुम्हारे दिलों (की नीयतों) को देखता है और आपने अपनी उंगलियों से अपने सीने की तरफ़ इशारा किया।
(मुस्लिम–सहीह–5/42-ह०–6542)
(अत्तरग़ीब वत्तरहीब–1/71–ह०-09)

अल्लाह तआ़ला इन्सान के दिल की रग से भी ज़्यादा क़रीब है

इन्सान का नफ़्स बुराई की तरफ़ राग़िब करने वाला है जबकि रुह उसे शर व बुराई से रोकती है और जब नफ़्स इन्सान पर ग़ालिब आ जाये तो उसकी दुनिया व आख़िरत दोंनों तबाह व बर्बाद हो जाती हैं और नफ़्स उसे अ़ज़ाबे नार का मुस्तहिक़ बना देता है इन्सान का नफ़्स अल्लाह तआ़ला के क़रीब होने का शऊ़र भी होने

नहीं देता और इसके नतीजे में बन्दा अल्लाह तआ़ला के क़रीब होने का इदराक हासिल नहीं कर पाता और अल्लाह तआ़ला की माअ़रिफ़त हासिल करने में नफ़्स बहुत ही मज़बूत दीवार का काम करता है अगर बन्दे को अल्लाह तआ़ला के क़रीब होने का इदराक हासिल हो जाये तो उसका हाल बदल जायेगा व उसे इख़्लास जुहदो तक़्वा हासिल हो जायेगा नफ़्स को क़ाबू करना और उस पर ग़ालिब आना आसान नहीं है मगर जो शख़्स इसके लिये कोशिश करता है तो अल्लाह तआ़ला उसकी ग़ैब से मदद फ़रमाता है फिर वो अपने नफ़्स पर क़ाबू पा लेता है और उस पर ग़ालिब आ जाता है फिर अल्लाह तआ़ला की माअ़रिफ़त और उसके क़रीब होने का इदराक उसे हासिल हो जाता है और उसको कामिल यक़ीन जाता है कि मेरा रब मेरे दिल की रग से भी ज़्यादा मेरे क़रीब है फिर वो अपने आअ़्माल को सिर्फ़ अल्लाह तआ़ला की रिज़ा व ख़ुशनूदी हासिल करने के लिये ख़ालिस कर लेता है और उसका दिल रिया (दिखावे) से पाक हो जाता है।

इरशादे बारी तआ़ला हैः–

बेशक हमने ही इन्सान को पैदा किया है और हम उन वसवसों को भी जानते हैं जो उसका नफ़्स (उसके दिल व दिमाग़ में) डालता है और हम उसके दिल की रग से भी ज़्यादा क़रीब हैं। (सूरह–क़ाफ़–50/16)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–

और ऐ हबीब जब मेरे बन्दे आपसे मेरी निस्बत सुवाल करें तो उन्हें बतादें कि मैं (उनके) नज़दीक हूँ और मैं पुकारने वाले की पुकार का जवाब देता हूँ जब भी वो मुझे पुकारता है पस उन्हें चाहिये कि मेरी फ़रमां बरदारी

इख़्तियार करें और मुझ पर पुख़्ता यक़ीन रखें ताकि वो राहे (मुराद) पा जायें। (सूरह–बक़राह–2/186)

फ़रिश्तों का आअ़माल को लिखना हिकमत के तक़ाज़े के तहत है कि क़यामत के दिन हर शख़्स को उसके आअ़माल नामे उसके हाथ में दे दिये जायेंगे हालांकि अल्लाह तआ़ला फ़रिश्तों के लिखने से भी बेनियाज़ है क्योंकि वो सबसे ज़्यादा पोशीदा व मख़्फ़ी चीज़ को भी जानने वाला है यहाँ तक कि नफ़्स के वसवसे भी उससे पोशीदा नहीं हैं अल्लाह तआ़ला हर शैः की निगेहबानी करने वाला है और हर शैः को देखने व सुनने वाला है और कायनात की हर मख़्फ़ी चीज़ पर मुत्तलाअ़ है।

इरशादे बारी तआ़ला हैः–
क्या वो ये गुमान करते हैं कि हम उनकी पोशीदा बातें और उनकी सरगोशियाँ नहीं सुनते क्यों नहीं हम ज़रुर सुनते हैं और हमारे भेजे हुये फ़रिश्ते भी उनके पास लिख रहे होते हैं। (सूरह–ज़ुख़रुफ़–43/80)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–
और तुम लोग अपनी बात छुपाकर कहो या फिर उसे बुलन्द आवाज़ में कहो वो सीनों की छुपी बातों को भी खूब जानता है। (सूरह–मुल्क–67/13)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–
उसी (अल्लाह) ने आसमानों और ज़मीन को छः दिनों में पैदा फ़रमाया है फिर अ़र्श पर क़ायम हुआ (और) जो चीज़ ज़मीन में दाख़िल होती है वो उसे भी जानता है और जो (चीज़ ज़मीन से) निकलती है वो उसे भी जानता है और जो चीज़ आसमान से उतरती है तो वो

उसे भी जानता है और जो कुछ आसमान में चढ़ता है वो उसे भी जानता है और वो तुम्हारे साथ होता है तुम जहाँ कहीं भी हो और जो कुछ तुम करते हो तो अल्लाह तआ़ला उसे खूब देखने वाला है।
(सूरह–हदीद–57/4)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–
बेशक वो (लोग) अपने सीनों को मोड़ लेते हैं ताकि वो उस (खुदा) से (अपने दिलों का हाल) छुपा सकें ख़बर दार जिस वक़्त वो अपने कपड़े (जिस्मों पर) ओढ़ लेते हैं (तो उस वक़्त भी) वो उन सब बातों को जानता है जो वो छुपाते हैं और जो आशकार करते हैं बेशक वो सीनों की (पोशीदा) बातों को खूब जानने वाला है।
(सूरह–हूद–11/5)

अल्लाह तआ़ला इन्सान के दिलो दिमाग़ में दाख़िल होने वाले वसवसों को भी जानता है जो उसका नफ़्स डालता है और दिलों के पोशीदा व मख़्फ़ी अहवाल व दिलों के राज़ों को भी अल्लाह तआ़ला जानता है बल्कि बन्दे के तमाम ज़ाहिरी व बातिनी अहवाल को अल्लाह तआ़ला बन्दे से भी ज़्यादा जानने वाला है और अल्लाह तआ़ला अपने इ़ल्म और अपनी कुदरत से ऐतबार से बन्दे के दिल की रग से भी ज़्यादा क़रीब है और ये वो रग है कि जो दिल के सबसे ज़्यादा क़रीब होती है और ये वो रग है जिसने दिल का इहाता कर रखा है इसलिये इन्सान को चाहिये कि ऐसे कामों के इरतिकाब से हया करे जिन कामों को अल्लाह तआ़ला ने मनाअ़ फ़रमाया है और उन कामों को सिद्क़ दिल व ख़ालिस नीयत और अल्लाह तआ़ला की रिज़ा और खुशनूदी हासिल करने के लिये बजा लाये कि जिनका अल्लाह–

तआ़ला ने हुक्म फ़रमाया है और वो अपने तमाम नेक अ़मल में रियाकारी (दिखावे) को दाख़िल न होने दें।

इरशादे बारी तआ़ला हैः–
फिर तुम्हारा पलटना उसी की तरफ़ है फिर वो (रोज़े महशर) तुम्हें उन (तमाम आअ़माल) से आगाह फ़रमां देगा जो तुम (इस ज़िन्दगानी में) करते रहे थे। (सूरह–अनआ़म–6/60)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–
और जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उससे अच्छी तरह ख़बरदार है। (सूरह–बक़राह–2/234)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–
और अ़नक़रीब तुम हर पोशीदा और ज़ाहिर के जानने वाले (रब) की तरफ़ लौटाये जाओगे सो वो तुम्हें उन आअ़माल से ख़बरदार फ़रमा देगा जो तुम करते रहे थे। (सूरह–तौबा–9/105)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–
बेशक अल्लाह आसमानों और ज़मीन के सब ग़ैब को जानता है और जो भी अ़मल तुम करते हो अल्लाह उसे खूब देखने वाला है। (सूरह–हुजुरात–49/18)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–
(ऐ इन्सान) क्या तुझे माअ़लूम नहीं कि अल्लाह तआ़ला उन सब चीज़ों को जानता है जो आसमानों में हैं और जो ज़मीन में हैं और कहीं भी तीन (लोगों) की कोई भी सरगोशी ऐसी नहीं होती मगर ये कि वो (अल्लाह अपने मुहीत इ़ल्म के साथ) उनका चौथा होता है और

न ही कोई पाँच लोगों की कोई सरगोशी होती है मगर ये कि वो (अल्लाह अपने मुहीत इ़ल्म के साथ) उनका छटा होता है और न ही इससे कम लोगों की और न ज़्यादा की मगर वो हमेशा उनके साथ होता है वो जहाँ कहीं भी होते हैं फिर वो रोज़े क़यामत उन्हें उन कामों से ख़बरदार फ़रमां देगा जो वो करते रहे थे।
(सूरह–मुजादला–58/7)

इरशादे बारी तअ़ाला हैः–
वो ग़ायब व हाज़िर हर चीज़ को जानने वाला है और ज़बरदस्त और बड़ा हिकमत वाला है।
(सूरह–तग़ाबुन–64/18)

इरशादे बारी तअ़ाला हैः–
वही रात को दिन में दाख़िल करता है और दिन को रात में दाख़िल करता है और वो सीनों की (पोशीदा) बातों से भी खूब बाख़बर है। (सूरह–हदीद–57/06)

इरशादे बारी तअ़ाला हैः–
और बेशक आपका रब उन (बातों) को ज़रुर जानता है जो उनके सीने (अपने अन्दर) छुपाये हुये हैं और (उन बातों को भी) जो ये आशकार करते हैं।
(सूरह–नम्ल–27/74)

इरशादे बारी तअ़ाला हैः–
आप फ़रमांदें कि जो तुम्हारे सीनों में है ख़्वाह तुम उसे छुपाओ या ज़ाहिर करो अल्लाह तअ़ाला उसे जानता है और जो कुछ आसमानों में है और जो ज़मीन में है वो खूब जानता है और अल्लाह तअ़ाला हर चीज़ पर बड़ा क़ादिर है। (सूरह–आले इमरान–3/29)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–

और अल्लाह से डरते रहो कि बेशक अल्लाह तआ़ला सीनों की पोशीदा बातों को खूब जानता है।
(सूरह–मायदा–5/07)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–

ऐ हमारे रब बेशक तू वो सब कुछ जानता है जो हम छुपाते हैं और जो हम ज़ाहिर करते हैं और अल्लाह तआ़ला पर कोई भी चीज़ न ज़मीन में पोशीदा है और न आसमान में (मख़्फ़ी है)।
(सूरह–इब्राहीम–14/38)

अल्लाह तआ़ला हमारे बहुत क़रीब है मगर क्या हम उसके क़रीब हैं अगर बन्दे को ये इदराक हो जाये कि अल्लाह तआ़ला मेरी दिल की रग से भी ज़्यादा क़रीब है तो बन्दा भी अल्लाह तआ़ला के क़रीब हो जायेगा अगर हम हर वक़्त ये गुमान और तसव्वुर में रखें कि मेरा रब मेरे क़रीब है और हमें देख रहा है और वो इतना क़रीब कि मेरी दिल की रग से भी ज़्यादा क़रीब है तो हमसे हर क़िस्म का गुनाह और बुराई दूर हो जायेगी और हम कोई गुनाह का काम नहीं करेंगे और अपने रब के फ़रमां बरदार और इताअ़त गुज़ार बन्दे बन जायेंगे और हम अपने किसी अ़मल में रियाकारी नहीं करेंगे और हमारे जुमला नेक आअ़माल ख़ालिस अल्लाह तआ़ला व उसके रसूल की रिज़ा व खुशनूदी के लिये ही अन्जाम पायेंगे और हमें अल्लाह तबारक व तआ़ला की कुर्बत नसीब होगी और जब दुनिया में लोगों की कुर्बत हमें फ़ायदा देती है तो फिर उस बन्दे का हाल क्या होगा कि जिसे अल्लाह तआ़ला की कुर्बत हासिल हो जाये।

दिखावे के लिये किया गया अ़मल बर्बाद हो जाता है

इरशादे बारी तआ़ला हैः–
ऐ ईमान वालो अपने सद्क़ात एहसान जता कर और दुख देकर उस शख़्स की तरह बर्बाद न किया करो जो माल लोगों को दिखाने के लिये ख़र्च करता है और न अल्लाह पर ईमान रखता है और न रोज़े क़यामत पर उसकी मिसाल एक ऐसे चिकने पत्थर की सी है जिस पर थोड़ी सी मिट्टी पड़ी हुई हो फिर उस पर ज़ोरदार बारिस हो तो वो उसे (फिर वही) सख़्त व साफ़ पत्थर करके छोड़ दे सो अपनी कमाई में से उन (रियाकारों) के हाथ कुछ भी नहीं आयेगा। (सूरह–बक़राह–2/264)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–
और जो लोग अपना माल लोगों को दिखावे के लिये ख़र्च करते हैं और न अल्लाह पर ईमान रखते हैं और न योमे आख़िरत पर और शैतान जिसका भी साथी हो गया वो बुरा साथी है। (सूरह–निसा–4/38)

रियाकारी एक निहायत मज़मूम और बहुत बुरी ऐसी बातिनी बीमारी व गुनाह है जिसकी सज़ा नारे दोज़ख और सख़्त दर्दनाक अ़जाब है इस बीमारी में गिरफ़्तार शख़्स अपना मर्तबा व मशहूरी और इ़ज़्ज़त पाने की ख़्वाहिश व तलब में इस क़दर आगे बढ़ जाता है कि उसे क़ब्र व क़यामत और दोज़ख़ के अ़ज़ाब का कोई ख़ौफ़ नहीं रहता और वो ये भूल जाता है कि आख़िर उसे मरना है और जिस ज़मीन की पीठ पर वो चल रहा है उस ज़मीन के पेट में भी जाना है फिर उसके

गुनाहों के सबब उस पर अ़ज़ाब मुसल्लत किया जाना है फिर क़यामत के अ़ज़ाब और उसकी हौलनाकियों से दो चार होना होगा और वो ये भी भूल जाता है कि क्या उसका जिस्म दोज़ख़ की सख़्त दहकती हुई आग को बर्दाश्त कर सकता है और उसे कभी ये ख़्याल भी नहीं आता कि जो वो नेक अ़मल लोगों को दिखाने के लिये कर रहा है क्या लोग सिर्फ़ उसकी ताअ़रीफ़ और वाहवाही और झूटी इ़ज़्ज़त के सिवा क्या कोई अज्र व सवाब दे सकेंगे क्या अल्लाह तआ़ला के ग़ज़ब व क़ब्र के अ़ज़ाब से बचा सकेंगे क्या दोज़ख़ की आग से बचा सकेंगे हरगिज़ नहीं फिर क्यों वो नेक अ़मल रियाकारी की आग में झोंक रहा है और वो खुद को बहुत बड़े ख़सारे और हलाकत में डाल रहा है और आअ़माल में दिखावा करके दोज़ख़ में अपना ठिकाना बना रहा है।

इरशादे बारी तआ़ला हैः–

क्या तुममें से कोई शख़्स ये पसन्द करेगा कि उसके पास खजूरों और अंगूरों का एक बाग़ हो जिसके नीचे नहरें बहती हों उसके लिये उसमें (खजूरों और अंगूरों के अ़लावा भी) हर क़िस्म के फल हों और (ऐसे वक़्त में) उसे बुढ़ापा आ पहुँचे और अभी उसकी औलाद भी नातवाँ (कमज़ोर) हो और (ऐसे वक़्त में) उस बाग़ पर एक चक्रवाती हवा आ जाये जिसमें निरी आग हो और वो बाग़ जल जाये (तो उसकी महरुमी और परेशानी का आ़लम क्या होगा) इसी तरह अल्लाह तआ़ला तुम्हारे लिये निशानियाँ वाज़ेह तौर पर बयान फ़रमाता है ताकि तुम ग़ौर करो (सो क्या तुम चाहते हो कि आख़िरत में तुम्हारे आअ़माल का बाग़ रियाकारी की आग में जल कर भस्म और बर्बाद हो जाये और तुम्हें तुम्हारे नेक आअ़माल का कोई अज्र न मिले)(सूरह–बक़राह–2/266)

बाअ़्ज़ ऐसे लोग भी हैं जो नेक कामों में हज़ारों लाखों रुपया ख़र्च करते हैं लेकिन उनका मक़्सद सिर्फ़ अपनी ताअ़रीफ़ और वाहवाही कराना होता है और वो चाहते हैं मेरे इस काम की ख़बर फोटो व वीडियो के ज़रिये खूब वायरल हो और मेरा नाम अख़बार में भी छपे तो रियाकारी की वजह से उनका माल ख़र्च करना ज़ाए हो जाता है और उन्हें कोई अज्र नहीं मिलेगा क्योंकि रिया (दिखावे) से अ़मल का सवाब बातिल हो जाता है जिस शख़्स ने आअ़्माले हसना किये हों मगर रिज़ाये इलाही के लिये न हों बल्कि रियाकारी की ग़रज़ से किये हों और वो इस गुमान में हों कि मेरे पास तो नेकियों का ज़ख़ीरा है मगर उसके सब आअ़्माल अकारत हो जाते हैं इसलिये हर मुसलमान को चाहिये कि रिज़ाये इलाही के लिये अपने जुमला नेक आअ़्माल अन्जाम दें और उसमें इख़्लास पैदा करें और अपने आअ़्माल का हर रोज़ मुहासिबा करें कि मेरे किसी अ़मल में रियाकारी शामिल तो नहीं हो गई है और बन्दे को हर वक़्त ये गुमान रखना चाहिये कि मेरा रब हर वक़्त, हर लम्हे हमें देख रहा है और वो मेरी हर हरकात व सकनात और मेरी नीयत और मेरे आअ़्माल से खूब वाक़िफ़ है

इरशादे बारी तआ़ला हैः-

वो ख़्यानत करने वाली निगाहों को भी जानता है और (उन बातों को भी जानता है) जो सीने (अपने अन्दर) छुपाये रखते हैं। (सूरह-मोमिन/ग़ाफ़िर-40/19)

जब बन्दे की ख़्वाहिश व तलब और तवज्जो दुनियावी माल व मताअ़ और ओहदा व मन्सब की मुहब्बत व रग़बत की तरफ़ माइल हो जाती है और आख़िरत की फ़िक्र दिलो दिमाग़ से निकल जाती तब वो ख़ौफ़े खुदा

और अ़ज़ाबे इलाही से बेपर‘वाह हो जाता है फिर वो जो भी अ़मल करता है अपनी ज़ात और मख़्लूक़ को दिखाने के लिये और अपनी दुनियावी ज़िन्दगी मुज़य्यन और बेहतर बनाने के लिये करता है उसकी सारी फ़िक्र खुद को लोगों से दुनियावी तमाम मुअ़ामलात में ऊँचा करने के लिये होती है और सब आअ़माल व अक़्वाल और जुमला इख़राजात रियाकारी पर मुश्तमिल होते हैं ताकि लोगों में उसका मक़ामो मर्तबा ऊँचा हो और उस की ताअ़ज़ीमो तकरीम में मज़ीद इज़ाफ़ा हो और लोग उसकी ताअ़रीफ़ व तौसीफ़ करें और ये अव्वल दर्जे की रियाकारी है जिसके सबब उसके आअ़माले सालेहा सब बातिल और अकारत हो जाते हैं जिसका उसे कोई भी अज्र नहीं मिलेगा बल्कि वो कसीर गुनाहों का मुरतकिब हो जाता है जिसका खामियाज़ा उसे आख़िरत में सख़्त तरीन अ़ज़ाब की शक्ल में भुगतना पड़ेगा।

ख़राबी है उन नमाज़ीयों के लिये जो अपनी नमाज़ का दिखावा करते

इरशादे बारी तअ़ाला हैः-

पस अफ़सोस (और ख़राबी) है उन नमाज़ीयों के लिये जो अपनी नमाज़ से बेख़बर हैं वो लोग दिखावा करते हैं। (सूरह-माऊ़न-107/4 ता 6)

इरशादे बारी तअ़ाला हैः-

बेशक मुनाफ़िक़ अल्लाह तअ़ाला को धोका देना चाहते हैं हालांकि वो उन्हें अपने ही धोके की सज़ा देने वाला है और जब वो नमाज़ के लिये खड़े होते हैं तो सुस्ती के साथ (महज़) लोगों को दिखाने के लिये खड़े होते हैं (सूरह-निसा-4/142)

बाअ़ज़ लोग ऐसे हैं जो नमाज़ पढ़ते हैं लेकिन उनकी नमाज़ रियाकारी से खाली नहीं होती और वो अपनी नमाज़ का दिखावा करते हैं ताकि लोग उनकी नमाज़ से वाक़िफ़ हों और उन्हें नमाज़ी कहें इससे वो लोगों के दिलों में अपनी जगह बनाते हैं और वो लोगों से अपनी ताअ़रीफ़ व तहसीन के ख्वाहिशमंद और तालिब रहते हैं और वो चाहते हैं कि लोग उनकी इ़ज़्ज़त व एहतिराम करें ऐसे लोग सादगी पसन्द नहीं होते बल्कि लोगों को दिखाने के लिये ऐसे कपड़े ज़ेबे तन करते कि वो लोगों से अलग नज़र आयें और वो सर पर इ़मामा सुन्नत जानकर नहीं बाँधते बल्कि लोगों को दिखाने के लिये बाँधते हैं और काँधों पर डिजाइन दार बड़ा रुमाल डालते हैं ताकि लोग उन्हें नमाज़ी परहेज़गार ख़्याल करें बात तल्ख़ है मगर सच्चाई यही है और जो अल्लाह तआ़ला की इताअ़त और इ़बादत लोगों को दिखाने के लिये करता है तो वो शिर्क करता है क्योंकि रियाकारी शिर्के ख़फ़ी व शिर्के असग़र है तो ऐसे नमाज़ियों को अपनी नमाज़ से किसी क़िस्म का कोई फ़ायदा न होगा और न ही उन्हें कोई अज्रो सवाब मिलेगा और नमाज़ में उन्होंने जो मेहनतो मशक़्क़त उठाई वो सब बेकार व ज़ाए हो जाती है और रियाकारी के सबब अल्लाह के गज़ब और उसके अ़ज़ाब से दो चार होना पड़ेगा।

इसलिये हमें चाहिये कि जब हम कोई इ़बादत या नेक अ़मल करें तो ख़ालिस अल्लाह तआ़ला की रज़ाजोई के लिये करें अपने दिल को रिया (दिखावे) के ख़्याल से पाक रखें और नीयत में ज़र्रा बराबर भी ये ख़्याल न आने दें कि लोग मेरी इ़बादत को देखें और मुझे नेक शख़्स गुमान करें क्योंकि रियाकारी हर नेक अ़मल को ज़ाए कर देती है और गुनाहों का मुरतकिब बना देती है

रियाकार दोज़ख़ की सबसे ख़तरनाक वादी में दाख़िल होंगे

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला से पनाह मांगो जुब्बिल हुज़्न से यानी ग़म के कुऐं से तो सहाबा किराम ने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह ये ग़म का कुआँ क्या है तो आपने फ़रमाया कि दोज़ख़ में एक वादी है जिससे दोज़ख़ भी रोज़ाना चार सौ मर्तबा उस से पनाह मांगती है तो सहाबा किराम ने अ़र्ज किया या रसूलल्लाह उस वादी में कौन लोग जायेंगे तो आपने फ़रमाया कि मेरी उम्मत के रियाकार (अपने आअ़माल में दिखावा करने वाले) उसमें दाख़िल किये जायेंगे।
(इब्ने माजा–सुनन–1/119-ह०–256)
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/222-ह०–2383)
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–5/300–ह०-6850, 6851)
(कंज़ुल उ़म्माल–2/227–ह०-7480, 7515)

➡ हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) से मर'वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि बेशक दोज़ख़ में एक वादी है कि जिससे दोज़ख़ रोज़ाना चार सौ मर्तबा पनाह माँगती है और अल्लाह तआ़ला ने ये वादी उम्मते मुहम्मदिया के उन रियाकारों के लिये तैयार की है जो कुराने पाक के हाफ़िज़ हैं व राहे ख़ुदा में सद्क़ा करने वाले और अल्लाह के घर के हाजी व राहे ख़ुदा में निकलने वाले होंगे (लेकिन ये सारे काम सिर्फ़ रियाकारी के लिये कर रहे होंगे) (तबरानी–मुअ़जम कबीर–12/175–ह०-12803)

अल्लाह तआ़ला की बन्दगी और इताअ़त में रियाकारी करना बड़ा गुनाह है अल्लाह तआ़ला अ़मल में दिखावा करने वाले शख़्स को नापसन्द करता और फ़रमाता है कि बन्दा मेरा इ़बादत मेरी करता है और अज्रो सवाब की उम्मीद भी मुझसे रखता है मगर वो अपने अ़मल दिखाता ग़ैरों को है ताकि लोग उसे ज़ाहिद और नेक शख़्स तसव्वुर करें और वो अल्लाह तआ़ला के यहाँ मक़ाम बनाने के बजाए वो लोगों के दरमियान अपना मक़ाम बनाता है और उस पर खुश होता है क़यामत के दिन अल्लाह तआ़ला रियाकार शख़्स से फ़रमायेगा कि जो तूने नेक आअ़माल किये वो सब ज़ाए हो गये और अब तू अपना अज्र उनसे लेले जिनको दिखाने के लिये तूने अ़मल किये थे अगर तूने वो आअ़माल मेरे लिये किये होते तो मैं आज तेरे सब आअ़माल का पूरा पूरा अज्र देता।

अपने नेक आअ़माल जिनको दिखाये थे उन्हीं से सवाब लेले

➡ रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि बन्दों के आअ़माल अल्लााह तआ़ला के हुजूर पेश किये जाते हैं तो अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है उनमें से जो आअ़माल ख़ालिस मेरे लिये हैं तो मैं उनकी जज़ा दूँगा और जो आअ़माल अल्लाह के सिवा किसी ग़ैर के लिये किये होंगे तो अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है कि उसका सवाब उसी से लेले जिसके लिये अ़मल किये गये।
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–5/297–ह०-6838)

➡ हज़रत महमूद बिन लबीद रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु

से रिवायत है कि सर‘वरे कायनात (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया सबसे ज़्यादा ख़ौफ़नाक चीज़ जिससे मैं तुम पर डरता हूँ वो शिर्के असग़र है तो सहाबा किराम ने अ़र्ज़ किया ऐ अल्लाह के रसूल ये शिर्के असग़र क्या है तो आपने फ़रमाया रियाकारी नीज़ फ़रमाया रोज़े क़यामत अल्लाह तअ़ाला जब लोगों को उनके नेक आअ़माल का बदला देते हुये इरशाद फ़रमायेगा तुम उन लोगों के पास जाओ जिनके लिये तुमने आअ़माल किये थे।
(मुस्नद अहमद–10/884–ह०-24030)
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–4/253–ह०-4301)
(अत्तरग़ीब वत्तरहीब–1/76–ह०-18)
(कंजुल उ़म्माल–2/226–ह०-7477, 7513)

➡हज़रत अबू सईद बिन फुज़ाला (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) से मर‘वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जब क़यामत के दिन अल्लाह तअ़ाला अगलों व पिछलों को क़यामत के दिन इकट्ठा करेगा तो पुकारने वाला पुकारेगा जिसने किसी अ़मल में अल्लाह तअ़ाला के साथ किसी को शरीक किया तो वो उसका सवाब भी उसी से मांगे जिसको दिखाने के लिये उसने अ़मल किया था क्योंकि अल्लाह तअ़ाला तमाम शरीको की शिर्कत से बेपर‘वाह है।
(इब्ने माजा–सुनन–3/374-ह०–4203)
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/721–ह०-3154)
(इब्ने हिब्बान–सहीह–1/537–ह०-404)
(कंजुल उ़म्माल–2/226–ह०-7472)

➡ हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हुमा) फ़रमाते हैं कि जो शख़्स दुनिया में किसी नेक अ़मल–

का दिखावा करे तो अल्लाह तआ़ला उसका अ़मल उसी बन्दे के हवाले कर देगा और फ़रमायेगा कि ज़रा देख क्या वो तुझे कोई फ़ायदा दे सकता है।
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–5/297–ह०-6838)

➡ रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि क़यामत के दिन इन्सान को मीज़ान के पास लाया जायेगा (उस वक़्त) वो भेड़ के बच्चे की तरह होगा तो अल्लाह तआ़ला फ़रमायेगा ऐ इन्सान मैं सबसे बेहतर शरीक हूँ जो अ़मल तूने मेरे लिये किये थे मैं आज तुझे उसका बदला दूँगा और मेरे ग़ैर के लिये जो अ़मल किये हैं उसका सवाब उसी से तलब कर जिसके लिये तूने अ़मल किये थे।
(कंज़ुल उ़म्माल–2/232–ह०-7536)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि जिसने मेरे लिये कोई अ़मल किया और उसमें ग़ैर को शरीक किया तो वो सारे का सारा अ़मल उस ग़ैर के लिये है और मैं तमाम शरीकों की शिरकत से बेपर‘वाह हूँ। (कंज़ुल उ़म्माल–2/231–ह०-7524)

रोज़े क़यामत रियाकारों को चार नामों से पुकारा जायेगा

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि क़यामत के दिन रियाकारों को चार नामों से पुकारा जायेगा 1-ऐ काफ़िर

2- ऐ फ़ाजिर 3- ऐ गद्दार 4- ऐ ख़सारा उठाने वाले तेरी हर कोशिश बेकार चली गई तेरे आअ़माल बेकार हो गये और यहाँ आख़िरत में तेरा कोई हिस्सा नहीं ऐ धोके बाज़ तू अपने आअ़माल का अज्रो सवाब उससे ले ले जिसको दिखाने के लिये तू अ़मल करता था।
(अल फ़िरदौसुल अख़बार–4/484-ह०–6901)

अक्सर ये देखा जाता है जब कोई शख़्स हज या उ़म्राह के लिये जाता है तो उसके दिल को उस वक़्त तक चैन नहीं मिलता जब तक कि वो अपने हज या उ़म्राह की शोहरत व चर्चा न करले और वो चाहता है ज़्यादा से ज़्यादा लोग उसके इस अ़मल पर मुत्तलाअ़ हों और उसकी ताअ़रीफ़ व ताअ़ज़ीम करें और लोगों में उसकी क़दरो मन्ज़िलत बढ़ जाये व लोग हाजी जी कहकर पुकारें और उसे उसकी लाइ़ल्मी की सबब ये माअ़लूम भी नहीं होता कि उसके अन्दर रिया दाख़िल हो चुकी है जो उसके अ़मल को ज़ाए कर देती है और उसका हज या उ़म्राह बारगाहे खुदावन्दी मक़बूल नहीं होता बल्कि रद्द कर दिया जाता है और उसे उससे कोई भी फ़ायदा हासिल नहीं होगा

हर शख़्स ये जानता है कि इस्लाम में दाख़िल होने की पहली शर्त 'ला इलाहा इल्लल्लाह' का इक़रार करना है यानी अल्लाह के सिवा कोई इ़बादत के लायक़ नहीं तो फिर वो क्यों अल्लाह के सिवा किसी ग़ैर को दिखाने के लिये इ़बादत करता इसी तरह हर मुसलमान जब वो नमाज़ में अत्तहिय्यातु पढ़ता तो वो उसके आख़िर में वो इस बात की गवाही देता कि 'अश्हदुअन ला इलाहा इल्लल्लाह' मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के सिवा कोई इ़बादत के लायक़ नहीं तो ये बड़े तअज्जुब की बात है

कि बन्दा एक तरफ़ तो इस बात की गवाही दे रहा है और दूसरी तरफ़ वो अपने अ़मल में अल्लाह तआ़ला की पाक ज़ात में किसी ग़ैर को शरीक करता है और जो इ़बादत अल्लाह तआ़ला के लिये करना चाहिये था वो ग़ैरो के लिये करता है और वो अल्लाह तआ़ला को दिखाने की बजाए लोगों को दिखाता है।

-: तीन रियाकारों का बुरा अंजाम :-

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि क़यामत के दिन बारगाहे खुदावन्दी में एक शहीद पेश होगा तो अल्लाह तआ़ला उसे अपनी नेअ़मतें शुमार करायेगा तो शहीद उन तमाम नेअ़मतों का इक़रार करेगा फिर अल्लाह तआ़ला फ़रमायेगा तुमने कौन सा अ़मल किया याअ़नी उन नेअ़मतों के शुक्र में तो वो कहेगा ऐ अल्लाह मैंने तेरी राह में जिहाद किया यहाँ तक कि मैं शहीद हो गया फिर हुक्म होगा तू झूठा है बल्कि तूने जिहाद इस वजह से किया था कि तू लोगों में बहादुर मशहूर हो जाये और मख़्लूक़ कहे कि फुलां शख़्स बड़ा बहादुर है और तेरी बहादुरी दुनिया में मशहूर हो गई फिर उस शहीद के लिये हुक्म होगा इसे दोज़ख़ में ले जाओ तो फ़रिश्ते उसे घसीटते हुये मुँह के बल दोज़ख़ में डाल देंगे

फिर वो शख़्स पेश होगा जिसने इ़ल्मे दीन सीखा व दूसरों को सिखाया होगा तो अल्लाह तआ़ला उसको अपनी नेअ़मतें शुमार करायेगा तो वो शख़्स उन तमाम नेअ़मतों का इक़रार करेगा फिर रब तआ़ला फ़रमायेगा कि तूने उन नेअ़मतों के बदले क्या आअ़माल अंजाम

दिये तो वो जवाब देगा ऐ अल्लाह मैंने तेरे लिये इ़ल्म सीखा और सिखाया उस पर हुक्म सुनाया जायेगा कि तू झूठा है बल्कि तूने इ़ल्म इसलिये सीखा व सिखाया ताकि तू दुनिया में अ़ालिम मशहूर हो जाये और तूने कुरान इसलिये पढ़ा ताकि लोग तुझको क़ारी कहें और तू इस नाम से शोहरत हासिल कर चुका है फिर उस शख़्स को दोज़ख़ में डालने का हुक्म होगा तो फ़रिश्ते उस को घसीटते हुये मुँह के बल दोज़ख़ में डाल देंगे और वो शख़्स दोज़ख़ की आग में जा गिरेगा

फिर वो शख़्स हाज़िर होगा जिसको अल्लाह तअ़ाला ने दुनिया में माल व दौलत अ़ता की तो अल्लाह तअ़ाला उस शख़्स को अपनी नेअ़मतें शुमार करायेगा तो वो शख़्स उन तमाम नेअमतों का इक़रार करेगा फिर हुक्म होगा कि तूने उन नेअ़मतों के बदले क्या अ़मल किये तो वो शख़्स अ़र्ज़ करेगा ऐ अल्लाह मैंने तेरी रिज़ा के लिये मैंने अपने माल को तेरी राह में ख़र्च किया उस पर हुक्म होगा कि तू झूठा है बल्कि तू खुद को सख़ी कहलाने की वजह से ख़र्च करता था और तू दुनिया में सख़ी मशहूर हो गया फिर उसको दोज़ख़ में डालने का हुक्म होगा तो फ़रिश्ते उसको घसीटते हुये मुँह के बल दोज़ख़ में डाल देंगे। (मुस्लिम–सहीह–3/772–ह०-4923)
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/219–ह०-2382)
(नसाई–सुनन–2/349-ह०–3142)
(इब्ने खुज़ैमा–सहीह–4/270–ह०-2482)
(इब्ने हिब्बान–सहीह–1/540–ह०-408)
(कंजुल उ़म्माल–2/230–ह०-7516, 7469, 7470)

बाअ़ज़ अह्ले इ़ल्म के क़ौल व फ़ेअ़ल में भी रियाकारी पायी जाती है वो अपनी तक़ारीर और बहस व तकरार

और इ़ल्म का इज़्हार व दीन में नई नई बातें वज़अ़ करके लोगों के सामने खुद को बहुत बड़ा इ़ल्म वाला साबित करने की कोशिश करते हैं ताकि लोग उनकी ताअ़रीफ़ व तौसीफ़ करें और अ़वाम में उनके इ़ल्म का चर्चा हो और ऐसे आ़लिम व क़ारी का इ़ल्म उन्हें कोई नफ़अ़ न देगा बल्कि रोज़े क़यामत उनके लिये वबाल और बाइसे हलाकत होगा।

बाअ़ज़ रोज़ेदारों का भी यही हाल है वो लोगों से पूछते फिरते हैं कि क्या आप रोज़े से हैं और खुद ही अपना रोज़ेदार होना ज़ाहिर कर देते हैं रोज़ा बातिनी अ़मल है और उसका बग़ैर किसी के पूछे क़सदन ज़ाहिर करना रियाकारी है ऐसे रोज़ेदारों को अपनी भूक व प्यास के सिवा कुछ भी हासिल नहीं होता और न ही कोई अज्र व सवाब मिलता है और दौराने रोज़ा उनकी मशक़्क़त और भूका प्यासा रहना सब बेकार व ज़ाए हो जाता है

और यही हाल बाअ़ज ज़कात सद्क़ात देने वालों का भी है पहले तो वो पूरी ज़कात निकालते ही नहीं और जो थोड़ा बहुत निकालते हैं तो इस तरह निकालते हैं कि उसका चर्चा-ए-आ़म हो और लोग उन्हें मालदार व सख़ी और नेक मुसलमान तसव्वुर करें और सदक़ा व ख़ैरात के मुआ़मले में भी उनका यही माअ़मूल रहता है राहे खुदा में ख़र्च किया जाने वाला माल जिसमें रिया (दिखावा) शामिल हो वो नामक़बूल है और उसका माल ख़र्च करना उसके किसी भी काम नहीं आयेगा बल्कि उसका माल रोज़े क़यामत उसकी हलाकत व मुसीबत का बाइस होगा और वो उस माल के अज्रो सवाब से महरुम रहेगा रियाकार शख़्स के वो जुमला आअ़माल जिनमें रिया शामिल हो वो सब अकारत और बर्बाद हो

जाते है और उसे अपनी नेकियों से कुछ नफ़अ़ हासिल नहीं होता और रियाकार ने अपने नेक आअ़माल में जो मेहनत व मशक़्क़त उठाई और जो इख़राजात किये वो सब बातिल और बेफ़ायदा और ज़ाए हो जाते हैं और रियाकारी के सबब वो अल्लाह तआ़ला के ग़ज़ब व उसके अ़ज़ाब में गिरफ़्तार होगा और सब रियाकार दोज़ख़ में दाख़िल किये जायेंगे।

रियाकार क़यामत के दिन अल्लाह तआ़ला को सज्दा न कर सकेंगे

➡ हज़रत अबू सईद खुदरी (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर‘वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि क़यामत के दिन अल्लाह तआ़ला जब अपनी पिण्डली खोलेगा तो तमाम मोमिन मर्द और मोमिन औ़रतें अल्लाह तआ़ला को सज्दा करेंगे लेकिन जो दुनिया में रियाकारी व शौहरत के लिये सज्दे करते थे वो बाक़ी रह जायेंगे और ये रियाकार सज्दा करने की कोशिश करेंगे मगर सज्दा न कर सकेंगे और उनकी कमर एक तख़्ते की मानिन्द हो जायेगी। (बुख़ारी–सहीह–4/842-ह०–4919)
(मिश्कात–3/300–ह०-5542, 5579)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–
जिस दिन साक़ (पिन्डली) खोल दी जायेगी और सज्दे के लिये बुलाये जायेंगे तो वो सज्दा न कर सकेंगे।
(सूरह–क़लम–68/42)

अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से नेक अ़मल की तौफ़ीक़ मिल जाना बहुत बड़ी सआ़दत है और उनका मक़बूल

हो जाना बड़ी कामयाबी है और रियाकार इन्सान खुद को बहुत बड़ा अ़क्लमंद कहता है मगर अस्ल में वो अव्वल दर्जे का बेवकूफ़ है जो रियाकारी करके अपनी नेकीयों को बर्बाद कर रहा है और सवाब की जगह अ़ज़ाब ख़रीद रहा है और जन्नत के बदले दोज़ख़ का सौदा कर रहा है और मख़लूक़ को राज़ी करने के लिये अ़मल कर रहा है और अपना माल भी ख़र्च कर रहा है मशक़्क़त भी उठा रहा है और उन लोगों के लिये अ़मल कर रहा है जो उसे कुछ भी नहीं दे सकते।

अव्वल तो हमारा नफ़्स और शैतान हमें नेकियाँ करने ही नहीं देता और अगर हम कोशिश करें और अल्लाह तआ़ला की तौफ़ीक मिल जाये तो हम जो भी अ़मल करते तो उस अ़मल में हम रिया (दिखावा) को शामिल करके अपने अ़मल को मक़बूल होने से रोक देते हैं इसलिये हमें चाहिये कि हम नफ़्स और शैतान के जाल में न फ़सें और अपने जुमला आअ़माल सिर्फ़ अल्लाह तआ़ला की रिज़ा व खुशनूदी हासिल करने के लिये करें

नफ़्स और शैतान हमेशा बेहयाई और बुरे कामों का हुक्म देता है

इरशादे बारी तआ़ला हैः–

बेशक नफ़्स तो बुराई का बहुत ज़्यादा हुक्म देने वाला है सिवाये उसके जिस पर मेरा रब रहम फ़रमाये। (सूरह–युसूफ़–12/53)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–

ऐ ईमान वालो शैतान के रास्तों पर न चलो और जो शख़्स शैतान के रास्तों पर चलता है तो वो याद रखे

कि वो (शैतान) हमेशा बेहयाई और बुरे कामों की राह दिखाता है और अगर तुम पर अल्लाह का फ़ज़्ल और उसकी रहमत न होती तो तुम में से कोई शख़्स कभी (गुनाहों से) पाक नहीं हो सकता था और अल्लाह जिसे चाहता है पाक फ़रमां देता है और अल्लाह तआ़ला खूब सुनने वाला जानने वाला है। (सूरह–नूर–24/21)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–

ऐ लोगों ज़मीन की चीज़ों में से जो हलाल व पाकीज़ा हैं उन्हें खाओ और शैतान के रास्तों पर न चलो बेशक वो तुम्हारा खुला दुश्मन है वो तुम्हें बुराई और बेहयाई का हुक्म देता है। (सूरह–बक़राह–2/168-169)

शैतान वसवसों के ज़रिये इन्सान को गुमराह करता है

इरशादे बारी तआ़ला हैः–

इबलीस ने कहा ऐ परवर दिगार इस सबब से जो तूने मुझे गुमराह किया मैं (भी) यक़ीनन उनके लिये ज़मीन में (गुनाहों) को खूब आरास्ता और खुशनुमा बना दूँगा और उन सबको ज़रुर गुमराह करके रहूँगा सिवाये तेरे बरगज़ीदा बन्दों के (जो मेरे और अपने नफ़्स के फ़रेब से) ख़लासी पा चुके हैं यानी जो तेरे मुख़लिस बन्दे हैं। (सूरह–हिज्र–15/39-40)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–

जिस शैतान के बारे में लिख दिया गया कि जो शख़्स उसको दोस्त रखेगा सो वो उसे गुमराह कर देगा और उसे दोज़ख़ के सख़्त अ़ज़ाब का रास्ता दिखायेगा। (सूरह–हज–22/4)

इख़्लास याफ़्ता बन्दों पर शैतान का ज़ोर नहीं चलता

इरशादे बारी तआ़ला हैः-

अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि ये (इख़्लास का) रास्ता ही सीधा रास्ता है जो मुझ तक पहुँचता है बेशक मेरे (इख़्लास याफ़्ता) बन्दों पर तेरा कोई ज़ोर नहीं चलेगा सिवाए उन भटके हुये बन्दों के जो तेरी पैर'वी करेंगे और बेशक उन सबके लिये वाअ़दा की जगह जहन्नम है। (सू०-हिज्र-15/41-43)

और शैतान ने कहा तूने मुझ पर उस (आदम अ़लै०) को फ़ौक़ियत और फ़ज़ीलत दी है (आख़िर इसकी क्या वजह है) अगर तू मुझे रोज़े क़यामत तक मुहलत दे तो मैं उस (आदम) की औलाद में चन्द लोगों के सिवा सबके लगाम डाले रखूँगा अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया (जा तुझे मुहलत है) तो उनमें से जो तेरी पैरवी करेगा तो बेशक दोज़ख़ ही तुम सब की पूरी पूरी सज़ा है और जिसपे भी तेरा बस चल सकता है तू उसे अपनी आवाज़ से डग मगाले और उन पर अपनी (फ़ौज के) सवार व प्यादा दस्तों को चढ़ा दे और उनके माल व औलाद में उनका शरीक बन जा व उनसे (झूठे) वाअ़दे कर और शैतान जो भी वाअ़दा करता है वो बस धोका ही होता है बेशक जो मेरे बन्दे हैं उन पर तेरा बस नहीं चलेगा और तेरा रब उन अल्लाह वालों की कार साज़ी के लिये काफ़ी है (सू०-बनी इसराईल-17/62-65)

इरशादे बारी तआ़ला हैः-

उसने कहा सो तेरी इ़ज़्ज़त की क़सम मैं उन सब लोगों

को ज़रुर गुमराह करता रहूँगा सिवाये तेरे उन बन्दों के जो तेरे मुख़लिस व बरगज़ीदा बन्दे हैं इरशाद हुआ तो हक़ ये है और मै हक़ ही कहता हूँ कि मैं तुझसे और जो तेरी पैर‘वी करेंगे उन सब को दोज़ख़ में भर दूँगा। (सूरह–सॉद–38/82-85)

हर इन्सान के साथ शैतान होता है

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर‘वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि तुममें से हर एक शख़्स के साथ एक शैतान मुक़र्रर किया गया है व एक फ़रिश्ता मुक़र्रर किया गया है सहाबा किराम ने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह क्या आपके साथ भी तो आपने फ़रमाया हाँ मेरे साथ भी मगर अल्लाह तआ़ला ने मेरी मदद फ़रमाई पस वो मुसलमान व मेरा इताअ़त गुज़ार हो गया और वो मुझे भलाई के सिवा कोई भी मशवरा नहीं देता। (तिर्मिज़ी–सुनन–2/600-ह०–2988)
(इब्ने हिब्बान–सहीह–2/156-ह०–997)
(मुस्लिम–सहीह–5/320-ह०–7108)
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–1/288-ह०–496)

शैतान खून की तरह गर्दिश करता है

➡ हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) से मर‘वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि शैतान इन्सान के अन्दर इस तरह दोड़ता है जैसे खून गार्दिश करता है। (बुख़ारी–सहीह–3/486-ह०–3281, 7171)
(अबू दाऊद–सुनन–4/583-ह०–4719, 4994)

रियाकारी शिर्के ख़फ़ी व शिर्के असग़र है

➡ हज़रत अबू सईद खुदरी (रज़िअल्लाहु तआला अ़न्हु) से मर‘वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया शिर्के ख़फ़ी ये है कि आदमी किसी इन्सान को राज़ी करने के लिये अ़मल करे (हाकिम–अल मुस्तदरक–6/341-ह०–7936,37,38,40)

➡ हज़रत शद्दाद बिन औस रज़िअल्लाहु तआला अ़न्हु से रिवायत है नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया जिस शख़्स ने दिखावे के लिये रोज़ा रखा तो उसने शिर्क किया और जिसने दिखावे के लिये नमाज़ पढ़ी तो उसने शिर्क किया और जिसने दिखावे के लिये सद्क़ा किया उसने शिर्क किया। (बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–5/298–ह०-6844, 6852)

➡ हज़रत अबू सईद खुदरी (रज़िअल्लाहु तआला अ़न्हु) से मर‘वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) हम लोगों के पास आये उस वक़्त हम दज्जाल का ज़िक्र कर रहे थे आपने फ़रमाया कि मैं तुम लोगों को वो बात न बतलाऊँ कि जिसका मेरे नज़दीक तुम पर दज्जाल से ज़्यादा डर है हमने अ़र्ज़ किया जी ज़रुर बतायें आपने फ़रमाया वो पोशीदा शिर्क है और वो ये है कि कोई शख़्स किसी दूसरे शख़्स को देखकर अपनी नमाज़ को ज़ीनत दे।
(इब्ने माजा–सुनन–3/374–ह०-4204)
(अत्तरग़ीब वत्तरहीब–1/75–ह०-17)

➡ हज़रत महमूद बिन लबीद रज़िअल्लाहु तआला अ़न्हु

से रिवायत है कि सर'वरे कायनात (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया सबसे ज़्यादा ख़ौफ़नाक चीज़ जिससे मैं तुम पर डरता हूँ वो शिर्के असग़र है तो सहाबा किराम ने अ़र्ज़ किया ऐ अल्लाह के रसूल ये शिर्के असग़र क्या है तो आपने फ़रमाया रियाकारी नीज़ फ़रमाया रोज़े क़यामत अल्लाह तआ़ाला जब लोगों को उनके नेक आअ़माल का बदला देते हुये फ़रमायेगा तुम उनके पास जाओ कि जिनके लिये तुमने आअ़माल किये थे। (मुस्नद अहमद–10/884–ह०-24030)
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–4/253–ह०-4301)
(अत्तरग़ीब वत्तरहीब–1/76–ह०-18)
(कंजुल उ़म्माल–2/226–ह०-7477, 7513)

जब किसी अ़मल में बिल्कुल इख़लास न हो बल्कि बन्दे की नीयत महज़ लोगों को दिखाना मक़सूद हो तो ये निफ़ाक़ की एक क़िस्म है और जब किसी अ़मल में बन्दे का मक़सद लोगों को दिखाना न हो लेकिन जब उसका अ़मल लोगों को माअ़लूम हो जाये फिर अ़मल करने वाले को भी ये माअ़लूम हो जाये कि लोग मेरे अ़मल पर मुत्तलाअ़ हैं फिर वो अपने अ़मल में मज़ीद इज़ाफ़ा करे और उसे और ज़्यादा बेहतर और उ़म्दाह करे ताकि लोग मेरी पहले से भी ज़्यादा ताअ़रीफ़ और तौसीफ़ और ताअ़ज़ीम करें और मेरे अ़मल का मज़ीद चर्चा व शोहरत हो तो ये रियाकारी और बातिनी शिर्क है और जब बन्दे के अ़मल का चर्चा होता और उसकी ताअ़रीफ़ होती है तो बन्दे दिल को सुकून व इत्मीनान और खुशी और नफ़्स को राहत हासिल होती है फिर वो इस बात की ख़्वाहिश व तलब और तमन्ना करता है कि उसकी और ज़्यादा ताअ़रीफ़ और तौसीफ़ और ताअ़ज़ीम हो तो ये पोशीदा शिर्क और रियाकारी है।

➡ हज़रत शद्दाद बिन औस रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु से रिवायत है नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया सबसे ज़्यादा मुझको अपनी उम्मत पर जिस चीज़ का डर है वो शिर्क का डर है हालांकि वो चाँद या सूरज या बुत की पूजा नहीं करेंगे लेकिन वो अपने अ़मल ग़ैरों के लिये करेंगे और दूसरी जिस चीज़ का डर है वो खुफ़िया शहवत है।
(इब्ने माजा–सुनन–3/375–ह०-4205)
(कंजुल उ़म्माल–2/227–ह०-7489)
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–5/295–ह०-6832)

➡ हज़रत शद्दाद बिन औस रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु एक दिन रोने लगे किसी ने वजह पूछी तो फ़रमाया कि मैंने रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) से एक बात सुनी थी वो याद आ गई और उसी ने मुझे रुलाया है मैंने रसूलुल्लाह को ये फ़रमाते हुये सुना कि मुझे अपनी उम्मत पर शिर्क और खुफ़िया शहवत का अंदेशा है तो मैंने अ़र्ज़ की या रसूलल्लाह क्या आपके बाअ़द आपकी उम्मत शिर्क करेगी तो आप ने फ़रमाया हाँ मगर वो चाँद सूरज, पत्थरों और बुतों की इबादत नहीं करेंगे बल्कि अपने आअ़माल लोगों को दिखाने के लिये करेंगे।
(मुस्नद अहमद–7/116–ह०-17250)
(कंजुल उ़म्माल–2/229–ह०-7505)

➡ हज़रत महमूद बिन लबीद रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु से रिवायत है कि सर‘वरे कायनात (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया बचाओ तुम अपने आपको मख़्फ़ी चीज़ों के शिर्क से पस लोगों ने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह मख़्फ़ी चीज़ों का शिर्क क्या–

है तो अपने फ़रमाया कि इन्सान नमाज़ का रुकूअ़ व सज्दा उस वक़्त पूरा करे जब उसको कोई आँख और नज़र उसको देख रही हो बस यही मख़्फ़ी चीज़ों का शिर्क है। (बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–3/121–ह०-3141) (इब्ने ख़ुज़ैमा–सहीह–2/149–ह०-937)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर'वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जो नमाज़ अच्छी पढ़े कि जब लोग उसकी नमाज़ को देख रहे हों और जब अकेला पढ़े तो अच्छे तरीक़े से न पढ़े तो ये अल्लाह तआ़ला से मज़ाक करना है याअ़नी ये शिर्क है (अबू यआ़ला–अल मुस्नद–4/156–ह०-5095)

➡ हज़रत जाबिर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर'वी है कि हुज़ूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया ऐ लोगो पोशीदा शिर्क से बचो कोई अपनी नमाज़ को मुज़य्यन करे जब लोग उसे देख रहे हों तो ये पोशीदा शिर्क है।
(कंज़ुल उ़म्माल–2/230–ह०-7520)
(अत्तरग़ीब वत्तरहीब–1/75–ह०-17)

➡ हज़रत महमूद बिन लबीद रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है कि सर'वरे कायनात (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया मुझे तुम्हारे मुताअ़ल्लिक़ शिर्के असग़र का सबसे ज्यादा अंदेशा है तो आपसे अ़र्ज़ किया गया ऐ अल्लाह के रसूल शिर्के असग़र क्या है तो आपने फ़रमाया रियाकारी।
(मिश्कात–3/215–ह०-5334)

–: माअ़मूली सी रिया भी शिर्क है :–

➡ हज़रत उ़मर (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) से मर‘वी है कि वो एक रोज़ रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) की मस्जिद की तरफ़ आये तो उन्होंने मुआ़ज़ रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु को हुजूर (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि वसल्लम) की क़ब्र मुबारक पर रोते हुये देखा तो उनसे पूछा तुम्हें कौन सी चीज़ रुला रही है तो उन्होंने फ़रमाया कि मुझे वो चीज़ रुला रही है जो मैंने रसूलुल्लाह से सुनी थी और मैंने आप को ये फ़रमाते हुये सुना कि माअ़मूली सी रियाकारी भी शिर्क है और जिस शख़्स ने मेरे किसी दोस्त से दुश्मनी रखी तो वो शख़्स अल्लाह तअ़ाला के साथ जंग करने के लिये मैदान में उतर आया और बेशक अल्लाह ऐसे नेक मुत्तक़ी और गुमनाम लोगों को पसन्द करता है कि जब वो ग़ायब हों तो उन्हें तलाश न किया जाये और जब वो मौजूद हों तो उन्हें पहचाना न जाये और न उन्हें क़रीब किया जाता है और उनके दिल हिदायत के चराग़ हैं और वो हर क़िस्म के गर्द व ग़ुबार से दूर हैं (किसी फ़ित्ने का शिकार नहीं होते)
(मिश्कात–3/213–ह०-5328)
(कंज़ुल उ़म्माल–2/227–ह०-7478, 7479)

शिर्क च्यूँटी की चाल से भी ज़्यादा पोशीदा होता है

➡ हज़रत अबू मूसा अशअ़री रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु से मर‘वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि ऐ लोगो शिर्क से

बचो क्योंकि वो च्यूँटी की चाल से भी ज्यादा पोशीदा है तो लोगों ने अ़र्ज़ किया हम उससे कैसे बचें तो आपने फ़रमाया यूँ कहा करो ऐ अल्लाह हम इस बात से तेरी पनाह चाहते हैं कि जानबूझ कर किसी चीज़ को शरीक करें और जिन चीज़ों का हमें इ़ल्म नहीं उन चीज़ों की मुआ़फ़ी चाहता हूँ। (मुस्नद अहमद–अ़रबी–ह०- 19606) (कंजुल उ़म्माल–2/230–ह०-7521, 7503, 7522)

➡ हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हुमा) से मर'वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया मेरी उम्मत में शिर्क सफ़ा पहाड़ पर च्यूँटी के चलने ज़्यादा पोशीदा है जो अंधेरी रात में चल रही हो।
(कंजुल उ़म्माल–2/228–ह०-7501, 7504)

अल्लाह तआ़ाला की इ़बादत में किसी को शरीक न करो

इरशादे बारी तआ़ाला हैः–
यक़ीनन तुम्हारा माअ़बूद सिर्फ़ एक ही माअ़बूद है पस जो शख़्स अपने रब से मुलाक़ात की उम्मीद रखता हो तो उसे चाहिये कि नेक अ़मल करे और अपने रब की इ़बादत में किसी को शरीक न करे (सू०–कह्फ़–18/110)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि अल्लाह तबारक व तआ़ाला ने इरशाद फ़रमाया कि मैं तमाम मुशरिकों के शिर्क से मुश्तग़नी (बेपरवाह) हूँ और जिस शख़्स ने कोई अ़मल किया और उसमें मेरे साथ किसी और को

शरीक किया तो मैं उसे उसके शिर्क के साथ अकेला छोड़ देता हूँ याअ़नी शिर्क उस को जिस अ़जाब तक पहुँचाता है मैं उसे उस अ़जाब से नहीं बचाता।
(मुस्लिम–सहीह–5/498–ह०-7475)

➡ हज़रत अबू सईद बिन फुज़ाला (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर‘वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया जब अल्लाह तआ़ला अगलों व पिछलों को क़यामत के दिन इकट्ठा करेगा याअ़नी उस दिन जिसके होने में कोई शक नहीं तो पुकारने वाला पुकारेगा कि जिसने किसी अ़मल में अल्लाह तआ़ला के साथ किसी और को शरीक किया तो वो अपने उस अ़मल का सवाब उसी से माँगे जिस के लिये उसने अ़मल किया था इसलिये कि अल्लाह तआ़ला तमाम शरीकों की शिरकत से बेपर‘वाह है।
(इब्ने माजा–सुनन–3/374–ह०-4203)
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/721–ह०-3154)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है कि मैं शरीकों से बेहतर हूँ और मैं शरीकों के शिर्क से बेपर‘वाह हूँ लिहाज़ा जिस ने कोई अ़मल किया और उसमें मेरे साथ किसी को शरीक बनाया तो मैं उससे बरी हूँ और वो अ़मल उसी के लिये है जिसे उसने शरीक बनाया था और उसे अपना अज्र उसी से माँगना चाहिये। (इब्ने हिब्बान–सहीह–01/531–ह०-395)
(इब्ने खुज़ैमा–सहीह–2/149–ह०-938)

➡ हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा)

फ़रमाते हैं कि एक शख़्स ने नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) से अ़र्ज़ किया ऐ अल्लाह के रसूल बेशक मैं अल्लाह तआ़ला के सामने खड़ा होने से भी वाक़िफ़ हूँ और मैं अपने अ़मल में अल्लाह तआ़ला की रिज़ा का इरादा करता हूँ और मैं ये भी चाहता हूँ कि मेरे अ़मल को लोग भी देखें तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने उसको कोई जवाब न दिया यहाँ तक कि यही आयत नाज़िल हुई कि 'यक़ीनन तुम्हारा माअ़बूद सिर्फ़ एक ही माअ़बूद है पस जो शख़्स अपने रब से मुलाक़ात की उम्मीद रखता हो तो उसे चाहिये कि नेक अ़मल करे और अपने रब की इ़बादत में किसी को शरीक न करे (बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–5/301–ह०-6854)

जो शख़्स अपने रब से मुलाक़ात के दिन से डरता हो और अपने गुनाहों से ख़ौफ़ ज़दा रहता हो और अपनी जुमला इ़बादत पर अल्लाह तआ़ला से अज्रो सवाब की उम्मीद रखता हो तो उसे चाहिये कि वो अपनी इ़बादत ख़ालिस अल्लाह तआ़ला के लिये करे और मख़्लूक़ को दिखाने के लिये कोई अ़मल न करे और अपनी नीयत और अपने दिल को रिया (दिखावे) से पाक रखे

हालांकि अक्सर ये देखने को मिलता है कि लोगों के ज़्यादातर अ़मल रियाकारी पर मुश्तमिल होते हैं और किसी अ़मल में रियाकारी करना शिर्क असग़र है और दिखावे का अ़मल उसी के लिये है जिसको दिखाने के लिये किया गया उस पर कोई अज्रो सवाब नहीं मिलता अक्सर ये देखा गया कि ज़कात, सद्क़ात की अदायगी में मुसलमान बहुत पीछे हैं क्योंकि ज़कात, सद्क़ात की अदायगी में लोगों को उस क़दर शोहरत नहीं मिलती–

जितनी दीगर उमूर में मिलती है और लोगों को जिन कामों के करने में ज़्यादा शोहरत व ताअ़रीफ़ो तहसीन और इ़ज़्ज़त मिलती है उन कामों में वो ज़्यादा मेहनत व मशक़्क़त उठाते और ज़्यादा माल भी ख़र्च करते हैं मसलन हज व उ़मराह, कुर्बानी, वग़ैराह और ज़कात व सद्क़ात की पूरी अदायगी न करने की दूसरी वजह ये है कि लोगों की एक नफ़्सी ख़सलत पायी जाती है कि वो अपने माल को अपनी ज़ात पर या अपनी ज़ात के ज़रिये सादिर होने वाले उमूर पर ख़र्च करने को ज़्यादा महबूब रखता है और माल की मिल्कियत के ऐतबार से अपने तरीक़े से ख़र्च करना चाहता है और दिखावे के लिये वो लाखों रुपये फ़िज़ूल ख़र्ची में उड़ा देता है जबकि ज़कात व सद्क़ात की अदायगी करने के बाअ़द वो उस माल का मालिक नहीं रहता और सद्क़ात व ज़कात लेने वाला उस माल का मालिक हो जाता है

लेकिन हज व उ़मराह, कुर्बानी, वग़ैराह में ऐसा नहीं है क्योंकि मज़कूरा आअ़माल में वो अपने माल का मालिक भी रहता है अपनी तबीअ़त के मुताबिक ख़र्च करता है मैंने देखा है कि लोग कुर्बानी के अ़मल में बहुत ज़्यादा दिखावा करते हैं और अपनी हस्बे हैसियत से ज़्यादा क़ीमत के जानवर को ख़रीदते हैं फिर वो लोग अपने अ़ज़ीज़ो अकारिब और अ़ाम व ख़ास लोगों को दिखाते हैं और ये ज़ाहिर करते हैं कि मैं भी मालदार हूँ और मैंने इतना कीमती जानवर ख़रीदा है और लोगों से ये पूछते हैं कि भाई बताओ ये जानवर कैसा रहा और अगर कोई पूछे या न पूछे उस जानवर की क़ीमत भी बताते हैं और मुहल्ले में उस जानवर को घुमाते फिराते और दिखाते हैं ताकि ज़्यादा से ज़्यादा लोग देखें और उनकी ताअ़रीफ़ व तहसीन और इ़ज़्ज़त करें और उन्हें

मालदार व इ़ज़्ज़तदार तसव्वुर करें और वो लोग अपनी ताअ़रीफ़ व तहसीन पर फूले नहीं समाते और बहुत खुश होते हैं और वो इस तरह रियाकारी पर मुश्तमिल कुर्बानी को बर्बाद कर लेते और ऐसे लोगों को उनकी कुर्बानी का कोई अज्र नहीं मिलेगा बल्कि रब तआ़ला के ग़ज़ब व उसके अ़ज़ाब से दो चार होना होगा।

–: शिर्क से अ़मल बर्बाद हो जाता है :–

इरशादे बारी तआ़ला है:–
और बिला शुबा आपकी तरफ़ और आपसे पहले लोगों की तरफ़ वही की गई है कि ऐ इन्सान अगर तूने शिर्क किया तो यक़ीनन तेरा अ़मल बर्बाद हो जायेगा और तू ज़रुर नुक़सान उठाने वालों में से हो जायेगा।
(सूरह–जुमर–39/65)

➡ हज़रत ज़ह्हाक बिन क़ैस (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि रब तआ़ला फ़रमाता है कि मैं बेहतरीन शरीक हूँ जो मेरे साथ (किसी चीज़ को) किसी अ़मल में शरीक करेगा तो वो अ़मल मेरे लिये नहीं बल्कि मेरे साथ जिसको शरीक किया उसके लिये है। (सुनन दार कुतनी–1/69–ह०-133)
(कंजुल उ़म्माल–2/229–ह०-7511)

➡ हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) से मर‘वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि अल्लाह की इ़बादत में लोगों की ताअ़रीफ़ मिलाने से बचो वरना तुम्हारे आअ़माल बर्बाद हो जायेंगे। (कंजुल उ़म्माल–2/229–ह०-7511)

अपने आअ़्माल दिखाने व सुनाने वाले लोगों का अन्जाम

➡ हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) से मर'वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जो शख़्स लोगों को सुनाने के लिये नेक काम करेगा तो अल्लाह तआ़ला रोज़े क़यामत उसकी ज़िल्लत लोगों को सुना देगा और जो शख़्स नेक आअ़्माल में दिखावा करेगा तो अल्लाह तआ़ला रोज़े क़यामत उसको सवाब दिखा देगा याअ़नी अल्लाह तआ़ला उसको सिर्फ़ सवाब दिखायेगा लेकिन उसको मिलेगा कुछ नहीं।
(मुस्लिम–सहीह–5/499–ह०-7476)

➡ हज़रत जुन्दुब (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर'वी है कि हुजूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जो शख़्स लोगों को सुनाने के लिये कोई अ़मल करेगा तो अल्लाह तआ़ला रोज़े क़यामत उसकी ज़िल्लत लोगों को सुना देगा और जो शख़्स लोगों को दिखाने के लिये कोई अ़मल करेगा तो अल्लाह तआ़ला क़यामत के दिन उसकी बुराईयाँ व ऐ़ब लोगों को दिखा देगा और सवाब सिर्फ़ दिखायेगा मगर मिलेगा कुछ नहीं और जो लोगों को मशक़्क़त में डालेगा तो अल्लाह तआ़ला रोज़े क़यामत उसे मुसीबत में मुब्तिला कर देगा।
(बुख़ारी–सहीह–6/422–ह०-7152)
(मुस्लिम–सहीह–5/500–ह०-7477)

➡ हज़रत अबू सईद खुदरी (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु)

से मर‘वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया जो शख़्स लोगों को सुनाने के लिये नेक अ़मल करेगा तो अल्लाह तआ़ाला रोज़े क़यामत उसकी रुसवाई लोगों को सुना देगा और जो कोई अ़मल में दिखावा करेगा तो अल्लाह तआ़ाला उसकी ज़िल्लत लोगों को दिखला देगा।
(इब्ने माजा–सुनन–3/375–ह०-4206)

➡ हज़रत मुआ़ाज़ बिन जबल रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु से मर‘वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जिसने लोगों को सुनाने और उनकी नज़रों में बड़ा बनने के लिये कोई अ़मल किया तो अल्लाह तआ़ाला क़यामत के दिन तमाम मख़्लूक़ात के सामने उसके ऐ़बों को ज़ाहिर कर देगा।
(अत्तरग़ीब वत्तरहीब–1/75–ह०-16)

शोहरत की तलब आफ़त और वबाल है

➡ हज़रत जुन्दुब (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से मर‘वी है कि हुजूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया जो शख़्स शोहरत की ख़्वाहिश करेगा तो अल्लाह तआ़ाला उसे रुसवा करेगा और जो शख़्स अपने अ़मल में रिया (दिखावा) करेगा तो अल्लाह तआ़ाला उसे रिया का अ़ज़ाब देगा और वो उसके मख़्फ़ी (छुपे हुये) ऐ़बों को सब लोगों के सामने ज़ाहिर कर देगा। (बुख़ारी–सहीह–6/82–ह०-6499)
(अत्तरग़ीब वत्तरहीब–1/74–ह०-14)
(कंजुल उ़म्माल–2/231–ह०-7534)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अम्र (रज़िअल्लाहु तआ़ाला

अ़न्हु) से रिवायत है रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया जिसने अपने इ़ल्म के ज़रिये शोहरत चाही तो अल्लाह तआ़ाला उसे अपनी मख़्लूक़ के सामने रुसवा और ज़लील व ख़्वार करेगा। (कंज़ुल उ़म्माल–2/231–ह०-7535)

अल्लाह तआ़ाला रियाकार के लिये रिया के असबाब पैदा फ़रमां देता है

➡ हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हुमा) से मर'वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया जो अपने अ़मल में रिया (दिखावा) करेगा तो अल्लाह तआ़ाला उसके लिये रिया के असबाब पैदा फ़रमां देगा और जो लोगों पर सख़्ती करेगा तो अल्लाह तआ़ाला रोज़े क़यामत उस पर सख़्ती करेगा।
(कंज़ुल उ़म्माल–2/227–ह०-7481, 7482, 7499)

रियाकार के लिये कोई अज्र नहीं

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि एक शख़्स ने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह जो शख़्स हुसूले दुनिया के लिये राहे ख़ुदा में जिहाद करे तो क्या उसको अज्रो सवाब मिलेगा तो हुज़ूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने इरशाद फ़रमाया कि उसके लिये कोई अज्र नहीं है।
(हाकिम–अल मुस्तदरक–3/310–ह०-3404)
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–5/298–ह०-6840)

➡हज़रत अबू मूसा अशअ़री रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु

से मर‘वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) से दरयाफ़्त किया गया कि कोई बहादुरी के जौहर दिखाने की नीयत से अल्लाह की राह में जिहाद करे और कोई ख़ानदानी ग़ैरत की वजह से जिहाद करे और लोगों को दिखाने के लिये जिहाद करे तो रसूलुल्लाह ने फ़रमाया कि जिसमें अल्लाह तआ़ला का कलमा बुलन्द हो तो वस वही अल्लाह की राह में जिहाद है।
(इब्ने माजा–सुनन–2/358–ह०-2783)

➡ हज़रत अबू सईद बिन फ़ुज़ाला (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर‘वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया जब अल्लाह तआ़ला अगलों व पिछलों को क़यामत के दिन इकट्ठा करेगा याअ़नी उस दिन जिसके होने में कोई शक नहीं तो पुकारने वाला पुकारेगा कि जिसने किसी अ़मल में अल्लाह तआ़ला के साथ किसी और को शरीक किया तो वो अपने उस अ़मल का सवाब उसी से माँगे जिस के लिये उसने अ़मल किया था इसलिये कि अल्लाह तआ़ला तमाम शरीकों की शिरकत से बेपर‘वाह है।
(इब्ने माजा–सुनन–3/374–ह०-4203)
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/721–ह०-3154)

–: रियाकार जन्नत में नहीं जायेगा :–

➡ हज़रत अबू सईद खुदरी (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर‘वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला ने हर रियाकार के लिये जन्नत हराम कर दी है।
(कंज़ुल उ़म्माल–2/227–ह०-7487)

जन्नत ने गुफ़्तगू की और कहा कि मैं रियाकार और बख़ील पर हराम हूँ। (तारीख़ मदीनतुल दमिश्क़–जिल्द––52/सफ़ा–151)

➡ हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) से मर'वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जो आख़िरत का अ़मल दुनिया के लिये करे तो वो जन्नत की ख़ुश्बू भी नहीं सूंघ सकेगा जबकि जन्नत की ख़ुश्बू 500 साल के फ़ासले से भी सूंघी जा सकती है।
(कंज़ुल उ़म्माल–2/228–ह०-7492)

➡ हज़रत अ़दी बिन हातिम (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर'वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि रोज़े क़यामत कुछ लोगों को जन्नत की तरफ़ जाने का हुक्म दिया जायेगा जब वो जन्नत के क़रीब पहुँचेंगे तो उसकी ख़ुश्बू सूँघेंगे और उन महल्लात को देखेंगे जो अल्लाह तआ़ला ने उनके रहने वालों के लिये तैयार किये हैं फिर जन्नत से उन्हें आवाज़ दी जायेगी कि तुम लोग यहाँ से वापस लौट जाओ इस जन्नत में तुम्हारे लिये कोई हिस्सा नहीं है वो हसरत के साथ लौटेंगे और फिर वो अ़र्ज़ करेंगे ऐ रब अगर तू हमको जन्नत दिखाने से पहले दोज़ख़ में दाख़िल कर देता तो हम जन्नत में रहने वालों का सवाब और जो उसमें रहने वालों के लिये तैयार किया गया है वो न देखते तो हम पर ज़्यादा आसानी थी तो अल्लाह तआ़ला फ़रमायेगा मैंने तुम्हें ये सब दिखाने का इरादा किया था क्योंकि जब तुम ख़ल्वत में होते थे तो बड़े बड़े गुनाह करके मुझे दिखाते और जब तुम लोगों से मिलते तो आ़जिज़ी का इज़हार करते हुये लोगों के

सामने अच्छे काम ज़ाहिर करते थे याअ़नी लोगों को दिखाने के लिये नेक अ़मल करते थे और तुम मुझसे नहीं डरते थे बल्कि लोगों से डरते थे और लोगों की इ़ज़्ज़त करते थे मगर मेरी इ़ज़्ज़त नहीं करते थे और लोगों के सामने गुनाह तर्क कर देते थे और मेरे सामने तुम गुनाह करते थे सो आज के दिन मैं तुम्हें सवाब से महरुम करके दर्दनाक अ़ज़ाब दूँगा।
(तबरानी–मुअ़जम औसत–4/286–ह०-5478)
(कंजुल उ़म्माल–2/232–ह०-7537)

दुनिया के लिये अ़मल करने वाले का आख़िरत में कोई हिस्सा नहीं

➡ हज़रत उबई बिन काअ़ब रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर'वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि इस उम्मत को आसानी, इ़ज़्ज़त और दीन में सरबुलन्दी और मदद व नुसरत की खुश ख़बरी दे दो और जिसने आख़िरत का अ़मल दुनिया के लिये किया तो आख़िरत में उसका कोई हिस्सा नहीं। (इब्ने हिब्बान–सहीह–1/538–ह०-405)
(अत्तरग़ीब वत्तरहीब–1/74–ह०-15)
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–5/295–ह०-6833)
(मुस्नद अहमद–अ़रबी–ह०-21222)

–: वलीमे का खाना हक़ व रिया :–

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर'वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि पहले रोज़ वलीमे का खाना हक़ है दूसरे रोज़ वलीमे का खाना–

सुन्नत है और तीसरे रोज़ का खाना शोहरत व रिया (दिखावा) है और जो भी शख़्स दिखावा करता है तो अल्लाह तआ़ला रोज़े क़यामत उसे रुसवा करेगा और जो शख़्स लोगों को दिखाने और सुनाने के लिये कोई काम करेगा तो अल्लाह तआ़ला उसके काम सुना देगा याअ़नी उसे कोई सवाब नहीं मिलेगा।
(इब्ने माजा–सुनन–2/42–ह०-1915)
(तिर्मिज़ी–सुनन–1/602–ह०-1097)
(अबू दाऊद–सुनन–4/910–ह०-3745)
(मिश्कात–2/322–ह०-3224)

जिस अ़मल में दिखावा शामिल हो वो अ़मल कुबूल नहीं होता

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है कि मैं तमाम शरीकों में से ज़्यादा बेपर‘वाह हूँ शिर्क से और फिर जो कोई ऐसा अ़मल करे जिसमें किसी और को शरीक करे तो मैं उस अ़मल से बेज़ार हूँ और मैं कभी भी उसको कुबूल नहीं करूँगा वो उसी के लिये हैं जिसको शरीक किया।
(इब्ने माजा–सुनन–3/374–ह०-4202)

➡ हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) से मर‘वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया जब क़यामत का दिन होगा तो एक मुनादी निदा करेगा जिसे पूरा मजमाअ़ सुनेगा वो लोग कहाँ हैं जो लोगों की इ़बादत करते थे उठो और अपना अज्र उन लोगों से वसूल करो जिनके

लिये तुम अ़मल करते थे इसलिये कि मैं ऐसा कोई भी अ़मल कुबूल नहीं करता जिसमें दुनिया व दुनियादारों की आमेज़िश व मिलावट हो।
(कंज़ुल उ़म्माल–2/232–ह०-7542)

–: रियाकार की दुआ़ कुबूल नहीं होती :–

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर'वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला शोहरत व रियाकारी करने वाले और ग़ाफ़िल शख़्स की दुआ़ कुबूल नहीं करता।
(कंज़ुल उ़म्माल–2/232–ह०-7539)

लोगों को अपने अन्दर भलाई दिखाने पर अ़ज़ाब

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन उ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा) से मर'वी है नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया रोज़े क़ियामत उस शख़्स को सबसे ज़्यादा अ़ज़ाब होगा जो लोगों को अपने अन्दर भलाई दिखाये जबकि उसमें कोई भलाई नहीं। (कंज़ुल उ़म्माल–2/227–ह०-7485)

बहुत से रोज़ेदार ऐसे जिन्हें भूक के सिवा कुछ नहीं मिलता

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि बहुत से रोज़ेदार

ऐसे हैं कि जिन्हें भूक और प्यास के सिवा कुछ हासिल नहीं होता और बहुत से रात को क़याम करने वाले भी ऐसे हैं कि जिन्हें जागने के सिवा कुछ भी हासिल नहीं होता। (इब्ने माजा–सुनन–1/579–ह०-1690)
(कंजुल ऊ़म्माल–2/227–ह०-7490, 7491)

जिस अ़मल में दिखावा हो उस अ़मल से अल्लाह तआ़ला बेज़ार है

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है कि जो कोई ऐसा अ़मल करे जिसमें किसी और को शरीक करे तो मैं उस अ़मल से बेज़ार हूँ वो उसी के लिये हैं जिसको उसने शरीक किया।
(इब्ने माजा–सुनन–3/374–ह०-4202)
(तबरानी–मुअ़जम कबीर–22/319–ह०-805)
(अत्तरग़ीब वत्तरहीब–1/76–ह०-19)
(कंजुल ऊ़म्माल–2/228–ह०-7490, 7497)

ख़ल्वत में अच्छे तरीक़े से इ़बादत न करना अल्लाह की तौहीन करना है

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर'वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया जिसने लोगों के देखने की जगह नमाज़ अच्छे तरीक़े से अदा की और ख़ल्वत में बुरे तरीक़े से अदा की तो ये तौहीन है उसने अपने रब की तौहीन की।
(कंजुल ऊ़म्माल–2/228–ह०-7494)

➡ हज़रत महमूद बिन लबीद रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु से मर‘वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया पोशीदा शिर्क से बचो कि कोई शख़्स किसी दूसरे शख़्स के देखने की वजह से नमाज़ का रुकूअ़ व सज्दा मुकम्म्ल करे (और ख़ल्वत में ऐसा न करे) तो ये शिर्क है (कंजुल उ़म्माल-2/230-ह०-7518)

रिया व शोहरत की जगह खड़ा होना अल्लाह की नाराज़गी का बाइस है

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन क़ैस (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) से मर‘वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जो शख़्स रिया और शोहरत की जगह में ख़ड़ा हुआ तो वो उस वक़्त तक अल्लाह तअ़ाला की नाराज़गी में है यहाँ तक कि बैठ जाये। (कंजुल उ़म्माल-2/228-ह०-7498)
(हेसमी-मजमउज़्ज़वाइद-10/274-ह०-17664)

रोज़े क़यामत रियाकारों को उनके आअ़माल वापस कर दिये जायेंगे

➡ हज़रत अनस (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) से मर‘वी है कि हुज़ूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने इरशाद फ़रमाया जब क़यामत का दिन होगा तो आअ़मालों को मज़बूत आअ़माल नामों में लाया जायेगा तो अल्लाह तअ़ाला फ़रमायेगा उसे कुबूल करलो और उसे वापस करदो तो फ़रिश्ते अ़र्ज़ करेंगे ऐ मेरे रब तेरी इ़ज़्ज़त की क़सम मैंने तो वही लिखा है जो उसने किया था अल्लाह तअ़ाला फ़रमायेगा कि उस ने मेरे अ़लावा किसी और की ख़ातिर अ़मल किया था

और आज मैं वो ही अ़मल कुबूल करूँगा जो सिर्फ़ मेरे लिये किये गये हैं। (सुनन दार कुतनी–1/69–ह०-132) (तबरानी–मुअ़जम औसत–4/604–ह०-6133) (कंजुल उ़म्माल–2/229–ह०-7506, 7507)

–: रिया व शोहरत पर अ़ज़ाब :–

➡ हज़रत औफ़ बिन मालिक रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से मर‘वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने इरशाद फ़रमाया कि जो रिया के मक़ाम पर खड़ा हुआ तो अल्लाह तआ़ला उसे रिया का अ़ज़ाब देगा और जो शोहरत के मक़ाम पर खड़ा हुआ तो अल्लाह तआ़ला उसे शोहरत का अ़ज़ाब देगा। (कंजुल उ़म्माल–2/231–ह०-7531, 7533)

दिखावे के लिये किये अ़मल सिज्जीन में डाले जाते हैं

➡ रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया फ़रिश्ते अल्लाह तआ़ला के बन्दों में एक बन्दे के आअ़माल लेकर ऊपर जाते हैं जिसे वो बहुत बड़े और पाकीज़ा समझ रहे होते हैं फिर वो उन आअ़माल को अल्लाह तआ़ला की मर्ज़ी के मुताबिक़ उसकी सल्तनत तक ले जाते हैं फिर अल्लाह तआ़ला उन फ़रिश्तों की तरफ़ वही करता है कि तुम मेरे बन्दे के आअ़माल के मुहाफ़िज़ हो और जो कुछ उसके दिल में था मैं उसका मुहाफ़िज़ हूँ मेरे इस बन्दे ने मेरे लिये अपने आअ़माल ख़ालिस नहीं किये तो इसके आअ़माल सिज्जीन में डाल दो और वो किसी बन्दे के आअ़माल को लेकर ऊपर चढ़ते हैं और वो उसके आअ़माल को

इन्तिहाई कम और हक़ीर समझते हैं बिल आख़िर जब वो अल्लाह तआ़ला सल्तनत में पहुँचते हैं तो अल्लाह तआ़ला उनकी तरफ़ वही करता है कि तुम मेरे बन्दे के आअ़माल के मुहाफ़िज़ हो और जो कुछ उसके दिल में था मैं उसका मुहाफ़िज़ हूँ मेरे इस बन्दे ने मेरे लिये अपने आअ़माल ख़ालिस किये हैं तो इसके आअ़माल इल्लीईन में डाल दो। (कंजुल उ़म्माल–2/229–ह०-7508)

निफ़ाक़ और रिया से पाक अ़मल पर सात सौ गुना अज्र

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि तुम में से कोई शख़्स अपने इस्लाम को उ़म्दाह बनाले याअ़नी निफ़ाक़ व रिया से पाक करले तो हर नेक काम जो वो करता है उसके बदले उसे दस से सात सौ गुना अज्र मिलता है। (बुख़ारी–सहीह–1/102–ह०-42)

दिखावे के लिये जिहाद किया तो अल्लाह तआ़ला रियाकार उठायेगा

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन अम्र (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) बयान करते हैं कि मैंने अ़र्ज़ किया ऐ अल्लाह के रसूल आप मुझे जिहाद व ग़ज़वा के मुताअ़ल्लिक़ इरशाद फ़रमायें तो आप (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया ऐ अ़ब्दुल्लाह अगर तुम सब्र के साथ और अज्र की नीयत से क़िताल करोगे तो अल्लाह तआ़ला तुम्हें सब्र करने वालों और अज्र के तलबगारों में उठायेगा और अगर तुम दिखलावे और

माल जमाअ़ करने करने की ग़रज़ से क़िताल करोगे तो अल्लाह तआ़ाला तुम्हें रियाकार और माल जमाअ़ करने करने वालों में उठायेगा ऐ अ़ब्दुल्लाह जिस हाल (और नीयत) में तुमने जिहाद किया या तुम्हें क़त्ल कर दिया गया तो अल्लाह तआ़ाला तुम्हें उसी हालत पर उठायेगा (अबू दाऊद–सुनन–3/70–ह०-2519)
(मिश्कात–2/513–ह०-3847)

➡ हज़रत मुआ़ाज़ (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से मरवी है कि हुजूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जिहाद दो क़िस्म का है एक वो कि जिसने अल्लाह तआ़ाला की रिज़ा हासिल करने के लिये जिहाद किया और इमाम व अमीर की इताअ़त की और बहुत क़ीमती माल ख़र्च किया और अपने साथी को आसानी व सहूलत फ़राहम की और फ़साद से इजतिनाब किया तो ऐसे शख़्स का सोना व जागना सब बाइसे अज्र है और दूसरा वो कि जिसने फ़ख़्र व रिया और शोहरत के लिये जिहाद किया और अपने अमीर व इमाम की नाफ़रमानी की और ज़मीन में फ़साद पैदा किया तो वो सवाब के साथ वापस नहीं आता। (मिश्कात–2/513–ह०-3846)

–: रियाकार की दाअ़वत कुबूल न करो :–

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि फ़ख़्र करने वालों और दिखावा करने वालों की दाअ़वत कुबूल न करो न ही उनका खाना खाओ जो फ़ख़्र व दिखावे की ख़ातिर ज़ियाफ़त करते हैं। (मिश्कात–2/323–ह०-3226)

-: किसी अ़मल में रिया गुनाह है :-

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया जो अपने घोड़े को फ़ख़्र व रिया के लिये बाँधता है वो उसके लिये गुनाह का सबब है। (बुख़ारी–सहीह–6/532–ह०-7356)
(इब्ने माजा–सुनन–2/359–ह०-2788)
(नसाई–सुनन–5/420–ह०-3593)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि ईमान यमन से है कुफ़्र मशरिक़ की तरफ़ से है और सुकून व इत्मीनान भेड़ बकरियाँ पालने वालों में और फ़ख़्र व रिया शोर शराबे के आ़दी घोड़े पालने वालों और ऊनी ख़ेमों के बासी चिल्लाने वालों में हैं। (मुस्लिम–1/166–ह०-186)

-: रसूलुल्लाह की दुआ़ :-

➡ हज़रत उम्मे माअ़बद (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) बयान करती हैं कि मैंने रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) को ये दुआ़ करते हुये देखा है ऐ अल्लाह मेरे दिल को निफ़ाक़ से और मेरे अ़मल को रिया से और मेरी ज़बान को झूट से, मेरी आँखों को ख़्यानत से पाक फ़रमांदे क्योंकि तू ख़्यानत करने वाली आँखों को जानता है और जो कुछ सीने (दिल) छुपाते हैं तू उसे भी जानता है।
(मिश्कात–2/103–ह०-2501)

-: इख़लास के बग़ैर अ़मल बेकार है :-

इख़लास ईमान का आअ़ला दर्जा है और इख़लास पर ही हर अ़मल का दारो मदार होता है और कोई शख़्स आख़िरत की इ़ज़्ज़त व मरातिबे आ़लिया को तीन चीज़ों के बग़ैर हासिल नहीं कर सकता अ़मल में इख़लास व दुनिया से उम्मीदों को छोटा करना व तक़्बे को लाज़िम पकड़ना और तीन चीज़ें दीन के कमाल की निशानी हैं इख़लास, यक़ीन और क़नाअ़त और चार सिफ़ात दीन की अस्ल हैं इख़लासे अ़मल और लोगों के साथ नेकी व ऐहसान करना, बुरे कामों से इजतिनाब करना और दुनिया से बेरग़बती और अल्लाह तआ़ला बग़ैर इख़लास के कोई भी अ़मल कुबूल नहीं करता और जो इख़लास के साथ नेक अ़मल करता है वही आख़िरत में अल्लाह तआ़ला की रहमत में होगा

इसलिये हर मुसलमान पर वाजिब है कि वो अपना हर नेक अ़मल अल्लाह तआ़ला की रिज़ा व खुशनूदी हासिल करने की ग़रज़ से इख़लास के साथ करे क्योंकि हर अ़मल का सवाब अल्लाह तआ़ला के सिवा कोई भी नहीं दे सकता और अपने अ़मल मख़लूक़ को दिखाने से हमें किसी भी क़िस्म का कोई भी फ़ायदा नहीं होगा और मख़लूक़ हमें कुछ भी नहीं दे सकती सिवाए झूटी ताअ़रीफ़ के तो ऐसी ताअ़रीफ़ किस काम की जो हमारे आअ़मालों को बर्बाद करदे जो हमने मेहनतो मशक़्क़त और अपना माल ख़र्च करके कमाये हैं और हमारे ही आअ़माल हमारे लिये अ़ज़ाब और हमारी हलाकत का बाइस बनें जब हम अपने आअ़माल को इख़लास के साथ अल्लाह तआ़ला रिज़ाजोई के लिये अन्जाम देंगे तो

अल्लाह तआ़ाला हमें अज्रो सवाब के साथ साथ अ़ज़ीम मरातिब और दुनिया व आख़िरत में इ़ज़्ज़त का मक़ाम अ़ता फ़रमायेगा और वो हमारे गुनाहों को बख़्श देगा और दोज़ख़ की आग से महफ़ूज़ रखेगा और जन्नत में दाख़िल फ़रमायेगा और इन्सान की हक़ीक़त ये है कि इन्सान के इख़्तियार में कुछ भी नहीं है जो वो हमें दे सके तो जब इन्सान के इख़्तियार में कुछ भी नहीं तो हम अपने आअ़माल उन लोगों को क्यों दिखायें जिनके पास कुछ भी नहीं है पस हम उस पर'वर दिगार को दिखायें जिसके इख़्तियार व तसर्रुफ़ में ज़मीनो आसमान और सारी कायनात है।

इरशादे बारी तआ़ाला हैः–
वही ज़िन्दा है उसके सिवा कोई माअ़बूद नहीं पस तुम उसकी इ़बादत इस तरह करो कि तुम्हारी इताअ़त और बन्दगी ख़ालिस उसी के लिये हो और तमाम ताअ़रीफ़ें अल्लाह ही के लिये हैं जो तमाम जहानों का पर'वर दिगार है। (सूरह–मु'मिन/ग़ाफ़िर–40/65)

इरशादे बारी तआ़ाला हैः–
बेशक हमने आपकी तरफ़ (ये) किताब हक़ के साथ नाज़िल फ़रमायी है तो आप अल्लाह की इ़बादत इस तरह करें कि आपकी इताअ़त व बन्दगी ख़ालिस उसी के लिये हो (और लोगों से कह दें) कि सुन लो ताअ़त और बन्दगी अल्लाह तआ़ाला ही के लिये है।
(सूरह–जुमर–39/2, 3)

इरशादे बारी तआ़ाला हैः–
दीन के ऐतबार से उससे बेहतर कौन है जिसने अपना चेहरा (समेत सारे वुजूद) को अल्लाह तआ़ाला के आगे

झुका दिया (और खुद को अल्लाह के ताबेअ़ कर दिया) और वो नेकोकार भी हो साथ ही वो दीने इब्राहीम की पैर'वी कर रहा हो और इब्राहीम (अ़लैहिस्सलाम) को अल्लाह तआ़ला ने अपना दोस्त बना लिया है।
(सूरह–निसा–4/125)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–
तो तुम अल्लाह तआ़ला की इ़बादत इस तरह करो कि तुम्हारी इताअ़त और बन्दगी ख़ालिस उसी के लिये हो अगरचा काफ़िरों को नागवार ही हो।
(सूरह–मु'मिन/ग़ाफ़िर–40/14)

जिस चीज़ में किसी दूसरी चीज़ की मिलावट न हों उसे ख़ालिस कहते हैं और मुसलमानों का इख़लास ये है कि वो अपने अ़मल की नीयत में अल्लाह तआ़ला के सिवाए किसी को भी शामिल न करे व अपने दिलों को अल्लाह तआ़ला के लिये ख़ालिस रखें क्योंकि लोगों की वजह से अ़मल करना शिर्क है और आअ़माल में इख़लास होना अल्लाह तआ़ला और बन्दे के दरमियान पोशीदा अ़मल है व रिया से पाक ख़ालिस इ़बादत सिर्फ़ अल्लाह तआ़ला ही के लिये है क्योंकि अल्लाह के सिवा कोई इ़बादत के लायक़ और मुस्तहिक़ ही नहीं है पस तमाम मुसलमानों को चाहिये कि नेक नीयत व इख़लास के साथ अल्लाह तआ़ला की इताअ़त व इ़बादत करें और अपने दिलों में अल्लाह तआ़ला की रिज़ा व कुर्ब के सिवाए किसी दूसरी शैः को दाख़िल न होने दें और अपने क़ौल व अ़मल को दिखाने, सुनाने और शोहरत की आमेज़िश से खाली रखें और हत्तल इमकान अपने आअ़माल को पोशीदा रखें ताकि उसमें इख़लास पैदा हो और अपने आअ़माल का मुहासिबा करते रहें।

इमाम ग़ज़ाली (रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि) फ़रमाते हैं कि इन्सान को चाहिये कि वो अपनी नेकियाँ इस तरह छुपाये जिस तरह वो अपने गुनाहों को छुपाता है और उसकी जो नेकियाँ ज़ाहिर हो जायें तो उन नेकियों को अपने आअ़माल में शुमार न करे क्योंकि हो सकता है कि कहीं उन नेकियों में रिया शामिल हो गई हो हज़रत जुन्नून मिस्री (रहमतुल्लाहि तआ़ला अ़लैहि) फ़रमाते हैं कि इख़लास की तीन अ़लामतें हैं कि उसके नज़दीक लोगों की ताअ़रीफ़ व मज़म्मत दोंनों बराबर हों और वो अपने आअ़माल को भूल जाये और वो आख़िरत में सवाब की तलब को भूल जाये।

हर इ़बादत में इख़लास निहायत ही ज़रुरी है

इरशादे बारी तआ़ला हैः–

हालांकि उन्हें फ़क़त यही हुक्म दिया गया गया था कि उसी (अल्लाह) के लिये अपने दीन को ख़ालिस करते हुये अल्लाह की इ़बादत करें (और हर बातिल से जुदा होकर वो) हक़ की तरफ़ यकसूई पैदा करें और नमाज़ क़ायम करें और ज़कात दिया करे और यही सीधा व मज़बूत दीन है। (सूरह–बय्यिना–98/05)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–

और तमाम तर इताअ़त उसी के लिये ख़ालिस करते हुये उस (अल्लाह) की इ़बादत किया करो।
(सूरह–आअ़राफ़–7/29)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–

बेशक मेरी नमाज़ और मेरा हज और कुर्बानी (समेत–

सारी बन्दगी) और मेरी ज़िन्दगी और मेरी मौत अल्लाह ही के लिये है जो तमाम जहानों का रब है।
(सूरह–अनअ़ाम़–6/162)

इरशादे बारी तअ़ाला हैः–
फ़रमां दीजिये मुझे हुक्म दिया गया है कि मैं इख़लास के साथ इताअ़त करते हुये अल्लाह तअ़ाला की बन्दगी करुँ। (सूरह–जुमर–39/11)

इरशादे बारी तअ़ाला हैः–
मगर वो लोग जिन्होंने तौबा की और अपनी इस्लाह कर ली और अल्लाह की रस्सी को मज़बूती से थाम लिया और अपना दीन ख़ालिस अल्लाह के लिये कर लिया तो ये मोमिनों के साथ हैं और अल्लाह तअ़ाला मोमिनों को बड़ा सवाब अ़ता फ़रमायेगा।
(सूरह–निसा–4/146)

अल्लाह तअ़ाला की बारगाह में वही अ़मल कुबूल होता है कि जिसमें ख़ालिस अल्लाह तअ़ाला की रिज़ा हासिल करने की नीयत मक़सूद हो और जिस अ़मल में सिर्फ़ अल्लाह तअ़ाला की रिज़ा मक़सूद हो और लोगों को दिखाना व सुनाना मक़सूद न हो तो वो अ़मल अगर थोड़ा भी तो अल्लाह तअ़ाला के नज़दीक वो बहुत बड़ा होता है और उसका अज्र भी कई गुना ज़्यादा अ़ता किया जाता है और अल्लाह तअ़ाला की इ़बादत जिसमें इख़लास के साथ अल्लाह तअ़ाला की इंतिहाई ताअ़ज़ीम और अपनी इंतिहाई अ़ाजिज़ी और इताअ़त में तज़ल्लुल हो तो वो इ़बादत मक़बूल और अल्लाह तअ़ाला के कुर्ब का बाइस होती है जब हम ये इक़रार करते हैं कि हम सब अल्लाह तअ़ाला के बन्दे हैं तो हम पर ये वाजिब

है कि हम अल्लाह तआ़ला के बन्दे होने का हक़ अदा करें और हर हाल में अपने रब को खुश व राज़ी करें और उसकी इ़बादत व इताअ़त रिया से पाक ख़ालिस अल्लाह तआ़ला के लिये करें और अपनी पूरी जिन्दगी उन कामों में सर्फ़ करें जिनसे अल्लाह तआ़ला राज़ी हो और अपने जीने का अहम और सबसे बड़ा मक़सद सिर्फ़ और सिर्फ़ अल्लाह तआ़ला को राज़ी करना हो

नमाज़ पढ़ना माअ़ने नहीं रखता बल्कि नमाज़ की मक़बूलियत माअ़ने रखती है इसी तरह से रोज़ा, हज ज़कात सद्क़ात वग़ैराह दीगर नेक अ़मल माअ़ने नहीं रखते बल्कि मज़कूरा आअ़माल का बारगाहे खुदावन्दी में कुबूल हो जाना माअ़ने रखता है और कोई भी नेकी कुबूल नहीं होती जब तक उस नेकी में इख़लास न हो अगर कोई शख़्स ख़ालिस अल्लाह तआ़ला के लिये ही अ़मल करे फिर लोग उसके सामने उसकी ताअ़रीफ़ व तौसीफ़ करें इस पर वो कहे कि ये सब कुछ अल्लाह तआ़ला के फ़ज़्लो करम और उसकी तौफ़ीक़ से है इस में मेरा अपना ज़ाती कुछ भी नहीं बल्कि मेरा जिस्म व मेरी जान का मालिक भी रब्बुल आ़लमीन है और जो नेकी हमने की वो मेरे रब ने मुझसे कराई है हालांकि मैं इसके क़ाबिल ही न था बल्कि मैं तो हक़ीर सरापा तक़सीर हूँ तो बेशक वो इख़लास पर साबित क़दम रहा और अगर लोग उसके पीठ पीछे उसकी ताअ़रीफ़ व तौसीफ़ करें तो वो उस पर ज़्यादा खुश न हो बल्कि ये कहे कि मेरे जुमला अअ़माल अल्लाह की इनायत है और जो उसे खुशी व मसर्रत हासिल हो तो उस पर वो अल्लाह तआ़ला का शुक्र अदा करे अल्लाह तआ़ला की हम्द व सना करे और अल्लाह तआ़ला का फ़ज़्ल और उसकी रहमत तसव्वुर करे और अपनी ताअ़रीफ़

की ख़्वाहिश न करे कि अब लोग मेरी मज़ीद ताअ़रीफ़ करें तो वो रियाकारी से पाक मुख़्लिस बन्दा है और अगर कोई शख़्स अपने आअ़माले सालेहा को अपना कमाल समझे तो वो बहुत बड़ा बेवकूफ़ और जाहिल है क्योंकि हर अच्छे अ़मल की तौफ़ीक़ मिलना अल्लाह तअ़ाला की मर्ज़ी पर मुन्हसिर है।

हज़रत इमाम ग़ज़ाली (रहमतुल्लाहि तअ़ाला अ़लैहि) फ़रमाते हैं इन्सान का दिल रब्बुल अ़ालमीन की नज़र का मक़ाम है तो उस शख़्स पर तअ़ज्जुब है जो ज़ाहिरी चेहरे का एहतिमाम करे कि उसे धोये और मैल कुचैल से साफ़ व सुथरा रखे ताकि मख़्लूक़ उसके चेहरे के किसी ऐ़ब पर मुततलाअ़ न हो मगर दिल का एहतिमाम न करे कि जो रब्बुल अ़ालमीन की नज़र का मक़ाम है जबकि उसे चाहिये था कि दिल को पाकीज़ा रखे और उसे आरास्ता करे और हर ऐ़ब से खाली व सुथरा रखे ताकि रब्बुल अ़ालमीन उसके दिल में किसी ऐ़ब को न पाये लेकिन अफ़सोस कि दिल तो गन्दगी व पलीदी से लबरेज़ है और जिस पर मख़्लूक़ की नज़र पड़ती है तो उसके लिये कोशिश होती है।

अगर बातिन ख़राब हो तो ज़ाहिरी आअ़माल भी ख़राब होंगे और अगर बातिन रियाकारी से पाक हो तो ज़ाहिरी आअ़माल दुरस्त होंगे और बातिनी गुनाहों में से एक गुनाह रियाकारी भी है और जिस नेकी में इख़्लास हो उसका सिला अज्रो सवाब के ऐतबार से निहायत ही बेहतर है और जिस नेकी में रिया (दिखावा) हो तो उसका सिला ज़िल्लत और हलाकत है और अ़मल में रियाकारी के सबब आख़िरत में सख़्त तरीन अ़ज़ाब से दो चार होना होगा।

-: माल ख़र्च करने में इख़लास :-

इरशादे बारी तआ़ला हैः-

अगर तुम अल्लाह को (इख़लास और नेक नीयती से) अच्छा क़र्ज़ दोगे तो वो उसे तुम्हारे लिये कई गुना बढ़ा देगा और तुम्हें बख़्श देगा और अल्लाह तआ़ला बड़ा क़द्रदान (और) बड़ा बुर्दबार है वो हर पोशीदा और ज़ाहिर का जानने वाला, सब पर ग़ालिब, बड़े इक़्तिदार का मालिक और बड़ी हिकमत वाला है।
(सूरह-तग़ाबुन-64/17, 18)

जब कोई शख़्स अल्लाह तआ़ला की रिज़ा व खुशनूदी हासिल करने की ग़रज़ से इख़लास और नेक नीयती से अपना हलाल माल गुरबा मसाकीन और ज़रुरत मंद लोगों को सद्क़ा देता है तो गोया वो अल्लाह तआ़ला को अच्छा क़र्ज़ देता है तो अल्लाह तआ़ला उसे कई सौ गुना बढ़ा देता है और उसे उसके तसव्वुर से भी ज़्यादा अज्र व सवाब अ़ता फ़रमाता है और ख़ालिस सद्क़े की बरकत से उसकी मग़फ़िरत फ़रमां देता है ये अल्लाह तआ़ला का हम मुसलमानों पर अ़ज़ीम एहसान और बड़ा फ़ज़्लो करम है मगर शर्त वही है कि बन्दा सिर्फ़ मेरी रिज़ा के लिये इख़लास के साथ मेरी राह में ख़र्च करे उसमें ज़र्रा बराबर भी रिया शामिल न हो और अल्लाह तआ़ला की ये शाने करीमी है कि वो थोड़े से ख़ालिस अ़मल पर बहुत ज़्यादा अ़ता फ़रमाता है लेकिन कसीर गुनाहों के बावुजूद फ़ौरन अ़ज़ाब नहीं देता बल्कि तौबा व इस्तिग़फ़ार के लिये मुहलत देता है ताकि मेरे बन्दे अपने गुनाहों की मुझसे मुआ़फ़ी तलब करें और मैं उन्हें मुआ़फ़ करके उनकी बख़्शिश कर दूँ

➡ हज़रत अनस (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर‘वी है कि हुजूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया ऐ लोगो मरने से पहले अल्लाह तआ़ला के हुजूर तौबा करो और मशगूलियत से पहले ज़्यादा से ज़्यादा नेक आअ़माल कर लो और अल्लाह तआ़ला का बाकसरत ज़िक्र करके पोशीदा और ज़ाहिरन सद्क़ात कसरत से अदा करके अपने व अपने रब के दरमियान तआ़ल्लुक़ क़ायम करलो इसकी वजह से तुम्हें रिज़्क़ दिया जायेगा व तुम्हारी मदद की जायेगी (इब्ने माजा–सुनन–1/366–ह०-1081)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला फ़रमाता है कि ऐ इब्ने आदम तू (मेरी राह में) ख़र्च कर मैं तुझ पर ख़र्च करूँगा नीज़ फ़रमाया कि अल्लाह का हाथ भरा हुआ है रात और दिन मुसलसल ख़र्च करने से भी उसमें कोई कमी नहीं आती उसका फ़ैज़ जारी रहता है तुमने देखा नहीं जब से अल्लाह तआ़ला ने ज़मीनो आसमान को पैदा किया तब से वो मुसलसल ख़र्च किये जा रहा है इसके बावुजूद भी कोई कमी नहीं आती। (बुख़ारी–सहीह–4/610–ह०-4684)
(मुस्लिम–सहीह–2/340–ह०-2380)
(इब्ने माजा–सुनन–1/101–ह०-197)
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/641–ह०-3045)

बड़ी ग़ौर तलब बात है कि बन्दा जो माल अल्लाह की राह में ख़र्च करता है तो वो माल है तो उसी का दिया हुआ बन्दे का अपना ज़ाती माल तो नहीं होता तो वो क्यों अल्लाह के माल को लोगों को दिखाता फिरता है

कि ऐ लोगो देखो मैं सद्क़ात ख़ैरात कर रहा हूँ जबकि उसे तो चाहिये था कि जिसका माल उसी को दिखाये और उसे राज़ी करे जिसने उसे माल अ़ता किया मगर वो तो लोगों को दिखाकर लोगों को खुश व राज़ी कर रहा है क्या ये अजीब बात नहीं हालांकि जिसकी अ़ता होती है तो अ़ता करने वाला चाहता है कि मैंने माल दिया तो मेरा माल मेरी मर्ज़ी व मेरे हुक्म के मुताबिक़ और मेरी इताअ़त करते हुये ख़ालिस मुझे राज़ी करने के लिये ख़र्च करो क्योंकि माल मैंने दिया तो मुझे राज़ी करो न कि लोगों को क्योंकि लोगों ने तुझे माल नहीं दिया जो तू उन्हें दिखाकर उन्हें राज़ी कर रहा है।

सद्क़ात का दिखावा बर्बादी का बाइस

इरशादे बारी तआ़ला हैः–
ऐ ईमान वालो अपने सद्क़ात एहसान जता कर और दुख देकर उस शख़्स की तरह बर्बाद न किया करो जो माल लोगों को दिखाने के लिये ख़र्च करता है और न अल्लाह पर ईमान रखता है और न रोज़े क़यामत पर उसकी मिसाल एक ऐसे चिकने पत्थर की सी है जिस पर थोड़ी सी मिट्टी पड़ी हुई हो फिर उस पर ज़ोरदार बारिस हो तो वो उसे (फिर वही) सख़्त व साफ़ पत्थर करके छोड़ दे सो अपनी कमाई में से उन (रियाकारों) के हाथ कुछ भी नहीं आयेगा। (सूरह–बक़राह–2/264)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–
और जो लोग अपना माल लोगों को दिखावे के लिये ख़र्च करते हैं और न अल्लाह पर ईमान रखते हैं और न योमे आख़िरत पर और शैतान जिसका भी साथी हो गया वो बुरा साथी है। (सूरह–निसा–4/38)

जो लोग ज़कात सद्क़ात गुरबा मसाकीन और मोहताज और ज़रुरत मंद और मुस्तहक़ीन को ज़ाहिरन देते हैं तो उन्हें सबसे पहले अपनी क़ल्बी कैफ़ियत पर नज़र करनी चाहिये कि उनके ज़कात सद्क़ात देते वक़्त कहीं उनके दिल में रिया दाख़िल तो नहीं हो रही अगर ऐसा हो तो उन्हें चाहिये कि अपने सद्क़ात पोशीदा तौर पर दें ताकि उसमें इख़्लास पैदा हो और इख़्लास के साथ अल्लाह तआ़ला की रज़ाजोई के लिये सद्क़ा ख़ैरात करें लोगों को दिखाने व सुनाने और अपनी ताअ़रीफ़ और वाहवाही के लिये सद्क़ा ख़ैरात न करें क्योंकि रियाकारी से आअ़माल का सवाब बातिल और बर्बाद हो जाता है और जिसको भी सद्क़ात दें उस पर एहसान न जतायें और न ही अपनी माली इमदाद का ताअ़ना देकर उसे अज़्ज़ियत पहुँचायें बाअ़ज़ लोग ऐसे भी हैं कि जो नेक कामों में लाखों रुपये ख़र्च कर देते हैं लेकिन उनका मक़सद सिर्फ़ शोहरत और वाहवाही कराना होता है तो ऐसे लोग अपना लाखों रुपया बर्बाद कर लेते हैं और उन्हें उससे कोई नफ़ाअ़ हासिल नहीं होता

इसलिये हमें चाहिये कि अपने तमाम आअ़माल पोशीदा तौर पर करें क्योंकि पोशीदा अ़मल ज़ाहिरी अ़मल से सत्तर गुना ज़्यादा फ़ज़ीलत रखता है और आअ़माल में रिया दाख़िल होने का ख़तरा भी नहीं रहता पोशीदा अ़मल हमें रियाकारी से बचाता है लेकिन अगर नीयत ये हो कि मेरे इस अ़मल को देखकर दूसरे लोगों में भी इस अ़मल को करने की तरफ़ रग़बत बढ़ेगी तो फिर ज़ाहिरी अ़मल करना बेहतर है मगर शर्त ये कि खुद को रियाकारी से पाक रखें और किसी भी सूरत अपने क़ल्ब में रिया दाख़िल न होने दें और जो भी अ़मल करें वो सिर्फ़ अपने रब को राज़ी करने के लिये करें।

दो बुनियादी चीज़ों के बग़ैर कोई भी अ़मल बारगाहे खुदावन्दी में मक़बूल नहीं होता एक ये कि वो अ़मल ख़ालिस अल्लाह तआ़ला के लिये हो दूसरी ये कि वो अ़मल सुन्नत के मुताबिक़ अन्जाम दिया गया हो और इख़लास हर अ़मल की रुह होती है इसके बग़ैर हर अ़मल बेजान है मगर अफ़सोस आज अक्सर लोगों के आअ़माल रिया पर मुश्ममिल दुनिया के हुसूल के लिये अन्जाम दिये जाते हैं और जो लोग अपने आअ़माल ख़ालिस अल्लाह तआ़ला के लिये करते हैं तो अल्लाह तआ़ला उन्हें अज्रो सवाब के साथ साथ उनकी दुनिया व आख़िरत में मदद व नुसरत फ़रमाता है और उनकी इ़ज़्ज़त को बढ़ाता है और दुनिया व आख़िरत में उनके दरजात बुलन्द फ़रमाता है और उनसे मुहब्बत फ़रमाता है और अ़ज़ाब से निजात देता है इख़लास और अच्छी नीयत अ़मल की बुनियाद और वो सुतून है जिस पर अ़मल का दारो मदार होता है।

अल्लाह की रिज़ा हासिल करने के लिये माल ख़र्च करने की मिसाल

इरशादे बारी तआ़ला हैः–

और जो लोग अपना माल अल्लाह तआ़ला की रिज़ा हासिल करने और अपने आप को (ईमान व इताअ़त पर) मज़बूत करने के लिये ख़र्च करते हैं उनकी मिसाल एक ऐसे बाग़ की सी है जो ऊँची सतह पर हो उस पर ज़ोरदार बारिश हो तो वो दो गुना फल लाये और अगर उसे ज़ोरदार बारिश न मिले तो उसे शबनम (या हल्की सी फुवार) भी काफ़ी हो और अल्लाह तआ़ला तुम्हारे आअ़माल को खूब देखने वाला है।
(सूरह–बक़राह–2/265)

इ़ल्म के बग़ैर अ़मल नाक़िस होता है और इख़लास व नेक नीयत के बग़ैर अ़मल बेकार और बे फ़ायदा होता बल्कि गुनाह और बाइसे हलाकत होता है और बन्दे की जैसी नीयत होती है वैसा ही उसको बदला मिलता है इख़लास व नेक नीयत से किया गया अ़मल मक़बूल होता है और दिखावा व शोहरत के लिये किया गया अ़मल मरदूद होता है

जो लोग ख़ालिसतन रज़ाये इलाही के हुसूल के लिये इख़लास के साथ सद्क़ात देते हैं तो वो थोड़ा हो या ज़्यादा अल्लाह तआ़ला उसको कुबूल फ़रमाता है और जिस माल से सद्क़ा दिया जाता है तो अल्लाह तआ़ला उसको बढ़ाता है और उसमें मज़ीद बरकतें भी अ़ता फ़रमाता है और अल्लाह तआ़ला माल की मिक़्दार को नहीं देखता बल्कि वो तो सद्क़ात देने वाले के दिल की कैफ़ियत देखता है इसलिये हर मुसलमान पर लाज़िम है कि वो अपने सद्क़ात की अदायगी में ऐसी नीयतों और ऐसे कामों से परहेज़ करे जिनकी वजह से उसके सद्क़ात बातिल और फ़ासिद होने का ख़दशा हो और ऐसी नीयतों में रियाकारी व दिखावे की नीयत है और ऐसे कामों में सद्क़ा लेने वालों पर एहसान जताना व ताअ़ना देकर उन्हें अज़ि़यत पहुँचाना है

मुख़लिसीन रिज़ाये इलाही के लिये जब अपना माल नेक कामों में ख़र्च करते हैं और गुरबा मसाकीन और मोहताजों व यतीमों और ज़रुरत मंदों को सद्क़ात देते हैं तो उन्हें इस बात का यक़ीन होता है कि अल्लाह तआ़ला उनके सद्क़ात को ज़ाए नहीं करेगा और कसीर अज्रो सवाब अ़ता फ़रमायेगा फिर भी वो डरते हैं कि कहीं उनके सद्क़ात नामक़बूल और बातिल न हो जायें

क्योंकि उनको आख़िरत का यक़ीन होता है इसलिये वो अल्लाह तआ़ला के ग़ज़ब और आख़िरत के अ़ज़ाब से डरते हुये इख़्लास के साथ अल्लाह तआ़ला की रिज़ा जोई के लिये नेक आअ़माल करते हैं और नेक कामों में वो अपना माल भी ख़र्च करते हैं और कसरते नेक आअ़माल के बावुजूद भी अल्लाह तआ़ला से डरना ये कमाले ईमान की अ़लामत है क्योंकि वो जानते हैं कि अपने रब की तरफ़ लौटकर जाना है मगर अब लोगों का हाल ये है कि कसीर गुनाहों के बावुजूद उनके दिल ख़ौफ़े खुदा से खाली हैं और वो नेक अ़मल अल्लाह के लिये नहीं बल्कि मख़लूक को दिखाने के लिये करते हैं।

इरशादे बारी तआ़ला हैः-

और जो लोग (अल्लाह की राह में इतना कुछ) देते हैं जितना वो दे सकते हैं और (इसके बावुजूद) उनके दिल ख़ाइफ़ रहते हैं कि वो अपने रब की तरफ़ पलट कर जाने वाले हैं (कहीं ये नामक़बूल न हो जायें)
(सूरह-मु'मिनून-23/60)

➡उम्मुल मुमिनीन हज़रत आयशा सिद्दीक़ा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा) से रिवायत है कि मैंने अ़र्ज़ किया या रसूलल्लाह ये आयत 'जो लोग अल्लाह की राह में देते हैं जितना वो दे सकते हैं और उनके दिल ख़ौफ़ ज़दा रहते हैं' से क्या वो लोग मुराद हैं जो ज़िना करते हैं और चोरी और शराब पीते हैं तो हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि इससे वो लोग मुराद हैं जो रोज़ा रखते हैं और सदक़ा देते हैं व नमाज़ पढ़ते हैं और फिर भी वो डरते रहते हैं कि शायद हमारे आअ़माल कुबूल न हों।
(इब्ने माजा-सुनन-3/373-ह०-4198)

–: मुख़लिसीन हिदायत के चराग़ हैं :–

➡ हज़रत मौला अ़ली (अ़लैहिस्सलाम) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि हर ग़ैर माअ़रुफ़ आदमी के लिये खुश ख़बरी है जो लोगों को पहचानता है लेकिन लोग उसको नहीं पहचानते मगर अल्लाह तआ़ला उन (मुख़लिस बन्दों) को अपनी रिज़ा के साथ पहचानता है यही लोग हिदायत के चराग़ हैं उनसे हर तारीक फ़ित्ना दूर कर दिया जाता है और अल्लाह तबारक व तआ़ला उनको अपनी रहमत में दाख़िल फ़रमाता है।

(इब्ने अबी शैबा–ऊ़र्दू–10/507–ह०-35638)
(इब्ने अबी शैबा–अ़रबी–7/100–ह०-34497)
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–5/303–ह०-6861)
(कंज़ुल ऊ़म्माल–2/34–ह०-5268)

–: पोशीदा सद्क़े की फ़ज़ीलत :–

➡ हज़रत अनस (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर‘वी है कि हुज़ूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जब अल्लाह तआ़ला ने ज़मीन को पैदा फ़रमाया तो वो हिलने लगी तो फिर अल्लाह तआ़ला ने उस पर पहाड़ रख दिये तो ज़मीन हिलना बन्द हो गई तो फ़रिश्तों को पहाड़ों की कुव्वत पर तअ़ाज्जुब हुआ और फ़रिश्तों ने अ़र्ज़ किया कि ऐ पर‘वर दिगार तेरी मख़लूक़ में पहाड़ों से भी ताक़तवर कोई चीज़ है तो अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया हाँ लोहा है जिसने पहाड़ को काट दिया फिर फ़रिश्तों ने अ़र्ज़ किया कि ऐ रब तेरी मख़लूक़ में लोहे से भी ताक़तवर

कोई चीज़ है अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया हाँ आग है जिसने लोहे को पिघला दिया फिर फ़रिश्तों ने अ़र्ज़ की ऐ रब तेरी मख़्लूक़ में आग से भी ज़्यादा ताक़त वर कोई चीज़ है अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया हाँ पानी है जिसने आग को बुझा दिया फिर फ़रिश्तों ने अ़र्ज़ किया कि ऐ रब तेरी मख़्लूक़ में पानी से भी ताक़तवर कोई चीज़ है अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया हाँ हवा है जिसने पानी को गदला कर दिया फिर फ़रिश्तों ने अ़र्ज़ किया ऐ रब तेरी मख़्लूक़ में हवा से भी ज़्यादा ताक़त वर कोई चीज़ है तो अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया हाँ इब्ने आदम का वो सद्क़ा जो दाँये हाथ से दिया गया और बाँये हाथ को ख़बर न हुई कि क्या दिया है।
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/887–ह०-3369)
(देलमी–मुस्नद अल फ़िरदौस–3/423–ह०-5298)

हर नेक अ़मल में इख़्लास का होना निहायत ज़रुरी है इसलिये हमें चाहिये कि ज़्यादा से ज़्यादा पोशीदा अ़मल करने की कोशिश करें क्योंकि हर पोशीदा अ़मल रिया से पाक होता है और अज्रो सवाब में भी ज़्यादा होता है और पोशीदा अ़मल के मक़बूल होने का इमकान भी ज़्यादा होता है और इन्सान का सबसे बड़ा दुश्मन खुद उसका नफ़्स व शैतान है जो उसे रियाकारी की तरफ़ माइल करता है और सिर्फ़ इख़्लास ही उसे रियाकारी से बचा सकता है और उसके दिल में इख़्लास तभी आ सकता है जब वो दुनिया की मुहब्बत व रग़बत से क़ता तआ़ल्लुक़ हो जाये और इस फ़ानी दुनिया से वो अपना मुहब्बती रिश्ता तोड़ कर किनारा कश हो जाये और दुनिया से सिर्फ़ अपनी ज़रुरत के मुताबिक़ ही ले क्योंकि इन्सान के आअ़्माल उसके दिल के मुताबिक़ ही अन्जाम पाते हैं और दिल की रग़बत जिस तरफ़ होती

है उसके आअ़माल भी उसी तरफ़ माइल होते हैं और जिसका दिल दुनिया से मुनक़ताअ़ हो जाये और अपनी आख़िरत और अल्लाह तअ़ाला की तरफ़ मुतावज्जै हो जाये तो उसके दिल में इख़लास पैदा हो जाता है और जिस अ़मल में कई मक़सद हों वो अ़मल बातिल और फ़ासिद हो जाता है अल्लाह तअ़ाला और उसके रसूल ने हमें शिर्क व रिया से बचने की ताकीद फ़रमाई है क्योंकि इख़लास के बग़ैर अल्लाह तअ़ाला का तक़र्रुब मुम्किन ही नहीं और इख़लास के बग़ैर हक़ीक़ी सआ़दत और अल्लाह तअ़ाला की माअ़रिफ़त हासिल नहीं होती और इख़लास के बग़ैर कोई अ़मल बारगाहे खुदा वन्दी में शरफ़े मक़बूलियत नहीं पाता और इख़लास के साथ अ़मल करने वाला शख़्स दुनिया में भी कामयाब होता है और आख़िरत में भी कामयाब होगा और मुख़लिस बन्दे का आख़िरी ठिकाना जन्नत है।

–: नेकियाँ छुपाने की फज़ीलत :–

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) से अ़र्ज़ किया गया कि कोई शख़्स नेक अ़मल करता है और उस नेक अ़मल को लोगों से छुपाता है फिर जब उसका अ़मल लोगों पर मुत्तलाअ़ हो जाता है तो वो इस बात को पसन्द करता है यानी वो इसलिये पसन्द करता है कि मेरे अ़मल को देखकर लोग भी इस नेक अ़मल को करने की तरफ़ राग़िब हों और लोग भी नेक अ़मल करें तो आपने फ़रमाया कि उसके लिये दो अज्र हैं एक नेकी छुपाने का दूसरा उस नेकी के ज़ाहिर करने का।
(तिर्मिज़ी–सुनन–2/222–ह०-2384)

अगर अ़मल में इख़्लास हो तो अल्लाह तआ़ला राज़ी होता है

➡ हज़रत अनस (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर'वी है कि हुजूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जो शख़्स दुनिया से इस हाल में जुदा हुआ कि वो अल्लाह तआ़ला के साथ इख़्लास पर था और वो अपनी इ़बादत में किसी को भी शरीक नहीं करता था और नमाज़ क़ायम करता था और ज़कात दिया करता था तो वो इस हाल में मरा कि अल्लाह तआ़ला उससे राज़ी होगा।
(इब्ने माजा–सुनन–1/53–ह०-70)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर'वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया तीन शख़्सों के दिलों में कीना व हसद नहीं होता उनमें से एक जो इख़्लास के साथ अल्लाह तआ़ला के लिये अ़मल करते हैं। (तिर्मिज़ी–सुनन–2/430–ह०-2658)
(अबू दाऊद–सुनन–1/197–ह०-235)

-: ख़ालिस अ़मल कुबूल होता है :-

➡ हज़रत अबू उमामा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर'वी है एक शख़्स ने रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) की बारगाहे अक़्दस में हाज़िर होकर अ़र्ज़ किया कि एक शख़्स जिहाद करता है और वो अज्र का भी तालिब है व शोहरत का भी तालिब है तो आप ने फ़रमाया उसके लिये कोई सवाब

नहीं है फिर आपने फ़रमाया कि बेशक अल्लाह तआ़ला उस अ़मल को कुबूल फ़रमाता है जो ख़ालिस उसके लिये हो और उस अ़मल में सिर्फ़ रब तआ़ला की पाक ज़ात का इरादा किया हो (नसाई–सुनन–5/66–ह०-3142)
(अत्तरग़ीब वत्तरहीब–1/69–ह०-05)
(कंज़ुल उ़म्माल–2/33–ह०-5281, 5261)

➡ हज़रत उ़बादा बिन सामित रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से मर'वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जो शख़्स अल्लाह तआ़ला की राह में जिहाद करे और उसकी नीयत में इख़लास न हो यानी अल्लाह तआ़ला की रिज़ा हासिल करने की ग़रज़ से जिहाद न करे बल्कि उसकी नीयत ख़्वाह एक रस्सी लेने की हो तो उसे वही चीज़ मिलेगी जिसकी उसने नीयत की होगी हालांकि रस्सी कोई बड़ी चीज़ नहीं मगर इतना ज़रा सा ख़्याल रखने से खुलूस को धब्बा लगता है और सवाब मिट जाता है इसलिये हर शख़्स को चाहिये कि हर नेक अ़मल सिर्फ़ अल्लाह तआ़ला की रिज़ा व खुशनूदी हासिल करने के लिये ही करे। (नसाई–सुनन–5/65–ह०-3141)

➡ हज़रत ज़ह्हाक बिन कैस (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि रब तआ़ला फ़रमाता है कि मैं बेहतरीन शरीक हूँ जो मेरे साथ (किसी चीज़ को) किसी अ़मल में शरीक करेगा तो वो अ़मल मेरे लिये नहीं बल्कि मेरे साथ जिसको शरीक किया उसके लिये है याअ़नी उसके लिये मेरे पास कोई जज़ा नहीं है नीज़ फ़रमाया ऐ लोगो अपने आअ़माल को अल्लाह तआ़ला के लिये ख़ालिस रखो क्योंकि अल्लाह तआ़ला–

सिर्फ़ उसी अ़मल को कुबूल फ़रमाता है जो ख़ालिसतन अल्लाह तआ़ला के लिये ही किया जाये और ऐसे मत कहो कि ये अल्लाह के लिये है और ये रिश्तेदारी की ख़ातिर है क्योंकि वो अ़मल फिर रिश्तेदारी के लिये ही रह जायेगा और उसका कुछ भी अज्र और सवाब नहीं मिलेगा। (सुनन दार कुतनी–1/69–ह०-133)
(अत्तरग़ीब वत्तरहीब–1/69–ह०-04)
(कंज़ुल उ़म्माल–2/229–ह०-7512, 5258)

➡ हज़रत फुजैल बिन अ़याज़ रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रिवायत है कि बेशक अल्लाह तआ़ला वही अ़मल कुबूल करता है जो ख़ालिस हो और ख़ालिस को भी उस वक़्त कुबूल करता है जब वो सुन्नत के मुताबिक़ हो। (बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–5/304–ह०-6869)

➡ हज़रत अनस (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर‘वी है कि हुजूर नबी अकरम सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम ने फ़रमाया बनी आदम के आअ़माल रोज़े क़यामत मुहर लगे हुये सहीफ़ों में अल्लाह तआ़ला के हुजूर लाये जायेंगे तो रब तआ़ला फ़रमायेगा कि इन को फेंक दो फ़रिश्ते कहेंगे अल्लाह की क़सम हम नहीं जानते हम तो सिर्फ़ ख़ैर ही जानते हैं यानी इनमें कोई बुराई नहीं है तो अल्लाह तआ़ला फ़रमायेगा कि बेशक उसके अ़मल मेरे लिये नहीं बल्कि ग़ैरुल्लाह के लिये थे और बेशक मैं कुबूल नहीं करता मगर सिर्फ़ वो ही अ़मल जिसके साथ मेरी रिज़ा तलब की गई हो।
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–5/297–ह०-6836)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है एक शख़्स नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला

अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ख़िदमत में हाज़िर हुआ और अ़र्ज़ की कि एक शख़्स जिहाद के लिये निकलता मगर वो दुनिया का माल चाहता है तो आपने फ़रमाया उसके लिये कोई अज्र नहीं है उसने तीन बार सुवाल किया आपने तीनो बार यही जवाब फ़रमाया।
(अबू दाऊद–सुनन–3/68–ह०-2516)
(नसाई–सुनन–5/65–ह०-3140)

➡ हज़रत अबू मूसा अशअ़री (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर‘वी है एक शख़्स रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और अ़र्ज़ किया कि कोई आदमी माले ग़नीमत के लिये जिहाद करता है और नामवरी के लिये जिहाद करता है और कोई अपनी बहादुरी दिखाने के लिये जिहाद करता है तो ऐसे हालात में अल्लाह की राह में जिहाद करने वाला कौन है तो आपने फ़रमाया कि जो शख़्स अल्लाह तआ़ला के दीन की सरबुलन्दी के लिये जिहाद करे वही मुजाहिद फ़ी सबीलिल्लाह है।
(बुख़ारी–सहीह–3/226–ह०-2810)
(मुस्लिम–सहीह–3/771–ह०-4919)

पोशीदा अ़मल का अज्र सत्तर गुना और रियाकारी पर कोई अज्र नहीं

➡ हज़रत अबू दरदा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि बेशक अ़मल पर तक़्वा इख़्तियार करना अ़मल से ज़्यादा ज़रुरी है बेशक एक शख़्स जो ख़ल्वत (तन्हाई) में पोशीदा अ़मल करता है तो उसके लिये अ़मले सालेह व पोशीदा अ़मल लिखा

जाता और उसके अज्र में सत्तर गुना अज्र बढ़ा दिया जाता है फिर शैतान उसके पीछे लगा रहता है हत्ता कि वो उस अ़मल को लोगों के सामने ज़िक्र कर देता है और वो उस अ़मल को ज़ाहिर कर देता है तो अल्लाह तआ़ला उसके नेक अ़मल को पोशीदगी से मिटा देता है और उसको ऐलानियाँ में लिख देता है और उसके सवाब का इज़ाफ़ा भी मिटा दिया जाता है फिर शैतान उसके पीछे पड़ा रहता है यहाँ तक कि वो दूसरी मर्तबा उस अ़मल का लोगों के सामने ज़िक्र कर देता है तो अल्लाह तआ़ला उसके अ़मल को पोशीदा व ऐलानियाँ दोनों से ही मिटा देता है और रियाकारी लिख देता है फिर वो ये पसन्द करने लग जाता है कि उसके अ़मल का तज़किरा किया जाता रहे और उसकी ताअ़रीफ़ की जाती रहे तो अल्लाह तआ़ला उसके अ़मल को रिया व दिखावे के अ़मल में लिख देता है (और उसका अ़मल फ़ासिद हो जाता है और उसे कोई सवाब नहीं मिलता)
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–5/303–ह०-6864, 6813)
(कंजुल उ़म्माल–2/229–ह०-7510)
(कंजुल उ़म्माल–01/276–ह०-1750)

इख़लास के साथ नमाज़ पढ़ने वाला अल्लाह का सच्चा बन्दा

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि आदमी जब लोगों के सामने नमाज़ अच्छी तरह से अदा करे और तन्हाई में भी अच्छी तरह से अदा करे तो अल्लाह तबारक व तआ़ला फ़रमाता है कि ये मेरा बन्दा सच्चा है।
(इब्ने माजा–सुनन–3/373–ह०-4200)

अम़ल में इख़लास हो तो क़लील भी सवाब में कसीर हो जाता है

➡ हज़रत मुआ़ज़ बिन जबल रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से मर‘वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने जब उनको यमन भेजा था तो उन्होंने अ़र्ज़ किया कि या रसूलल्लाह मुझे कोई नसीहत फ़रमांयें तो आपने फ़रमाया कि दीन को ख़ालिस करलो अगर इख़लास के साथ अ़मल करोगे तो थोड़ा अ़मल काफ़ी हो जायेगा। (कंज़ुल उ़म्माल–2/33–ह०-5257)
(हाकिम–अल मुस्तदरक–6/301–ह०-7844)
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–5/302–ह०-6859)

मुसलमान का दिल तीन चीज़ों में ख़्यानत नहीं करता

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन मसऊ़द (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर‘वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि मुसलमान का दिल तीन चीज़ों में ख़्यानत नहीं करता अ़मल को अल्लाह तआ़ला के लिये ख़ालिस करना व मुसलमानों के इमामों की ख़ैर ख़्वाही करना और उनकी जमाअ़त को लाज़िम पकड़ना। (तिर्मिज़ी–सुनन–2/430–ह०-2658)

इख़लास के साथ लाइलाहा इल्लल्लाह कहने की फ़ज़ीलत

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि

व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया उस ज़ात की क़सम जिसके क़ब्ज़े कुदरत में मेरी जान है कि मेरी शफ़ाअ़त हर उस शख़्स के लिये होगी जो खुलूस दिल के साथ ला इलाहा इल्लल्लाह की गवाही देता हो और उसका दिल उसकी ज़बान की तसदीक़ करता हो और उसकी ज़बान उसके दिल की तसदीक़ करती हो।
(मुस्नद अहमद–4/252–ह०-8256, 12819)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि क़यामत के दिन मेरी शफ़ाअ़त का सबसे ज़्यादा मुस्तहिक़ और सअ़ादत मंद वो शख़्स होगा जिसने दिल के इख़लास के साथ ''ला इलाहा इल्लल्लाह'' कहा होगा।
(बुख़ारी–सहीह–6/113–ह०-6570)
(कंज़ुल उ़म्माल–1/276–ह०-1758)

➡ हज़रत अनस (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) से मर'वी है कि हुज़ूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि क़यामत के दिन मैं खड़ा अपनी उम्मत का इन्तिज़ार कर रहा हूँगा ताकि वो पुल सिरात उ़बूर करले कि मेरे पास हज़रत ईसा (अ़लैहिस्सलाम) आयेंगे और फिर कहेंगे कि ऐ मुहम्मद (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ये सारे अम्बिया इकट्ठे होकर आपके पास आये हैं ताकि आप अल्लाह तअ़ाला से दुअ़ा करदें ताकि उम्मतों की इस भीड़ को जहाँ चाहे मुताफ़र्रिक़ करके उनके ठिकानों में पहुँचा दे क्योंकि लोग बहुत परेशान हो रहे हैं उस वक़्त लोग पसीने की लगाम मुँह में डाले हुये होंगे और मुसलमान पर क़यामत की सख़्ती बड़ी आसान होगी और काफ़िर

पर बड़ी सख़्त दुश्वार मौत जैसी कैफ़ियत तारी होगी फिर हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) अ़र्श के नीचे खड़े हो जायेंगे और वो रुतबा आपको मिलेगा जो किसी मुन्तख़ब फ़रिश्ते और नबी व रसूल को भी अ़ता न होगा और फिर अल्लाह तआ़ला फ़रमायेगा ऐ मुहम्मद (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम) सर को उठाओ और मांगो अ़ता किया जायेगा और सिफ़ारिश करें आपकी सिफ़ारिश कुबूल होगी चुनांचा मेरी उम्मत के बारे में ये सिफ़ारिश कुबूल होगी कि हर 99 में से एक आदमी दोज़ख़ से निकाल लूँ लेकिन मैं अपने रब से मुसलसल इसरार करता रहूँगा और उस वक़्त तक वहाँ से न हटूँगा जब तक मेरी सिफ़ारिश कुबूल न हो जाये और फिर अल्लाह तआ़ला मुझे उस सिफ़ारिश की कुबूलियत अ़ता करते हुये फ़रमायेगा कि ऐ मुहम्मद (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) मैंने आपकी उम्मत में जितने लोग पैदा किये हैं तो उनमें से हर उस शख़्स को निकाल लीजिये जिसने एक दिन भी इख़्लास के साथ लाइलाहा इल्लल्लाह की गवाही दी हो और वो उसी पर फ़ौत हो गया हो।
(मुस्नद अहमद–5/546–ह०-12855)

➡ हज़रत मुआ़ज़ बिन जबल रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से मर‘वी है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम ने फ़रमाया कि दुनिया से रुख़सती के वक़्त जिस शख़्स का आख़िरी कलाम इख़लास और यक़ीने क़ल्ब के साथ ‘‘लाइलाहा इल्लल्लाह’’ हो उसके लिये जन्नत वाजिब हो गई।
(मुस्नद अहमद–10/354–ह०-22410)

➡ हज़रत इब्ने अ़ब्बास (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा)

से मर‘वी है कि दो आदमी हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) के पास अपना एक झगड़ा लेकर आये तो आपने मुद्दई से दो गवाहों का तक़ाज़ा किया लेकिन उसके पास गवाह नहीं थे इसलिये आपने मुद्दआ़ा अ़लैह से क़सम का मुतालबा किया तो उसने यूँ क़सम खाई कि उस अल्लाह की क़सम जिसके सिवा कोई माअ़बूद नहीं फिर आपने फ़रमाया कि तुमने ये काम किया है लेकिन तुम्हारे लाइलाहा इल्लल्लाह कहने में इख़लास की बरकत से तुम्हारे गुनाह मुआ़फ़ हो गये
(अबू दाऊद–सुनन–3/609–ह०-3275)
(मुस्नद अहमद–2/127–ह०-2280)

➡ हज़रत उ़स्मान ग़नी (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से मर‘वी है कि मैंने रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) को एक मर्तबा ये फ़रमाते हुये सुना कि मैं एक ऐसा कलमा जानता हूँ जो बन्दा उसे दिल से हक़ समझ कर कहेगा तो उस पर दोज़ख़ की आग हराम हो जायेगी हज़रत उ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) ने उनसे कहा मैं बताऊँ कि वो कलमा कौन सा है वो कलमा इख़लास है जो अल्लाह तआ़ाला ने अपने पैग़म्बर और उनके सहाबा पर लाज़िम किया था और हुजूर (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि वसल्लम) ने अपने चचा हज़रत ख़्वाजा अबू तालिब (अ़लैहिस्सलाम) के सामने उनकी मौत के वक़्त पेश किया था याअ़नी अल्लाह तआ़ाला की वहदानियत की गवाही।
(मुस्नद अहमद–1/267–ह०-447)

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तआ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जब कोई बन्दा–

कबीरा गुनाहों से बचते हुये इख़लास के साथ लाइलाहा इल्लल्लाह कहता तो उसके लिये आसमान के दर'वाज़े खोल दिये जाते हैं हत्ता कि वो कलमा अ़र्श तक पहुँच जाता है। (मिश्कात–2/40–ह०-2314)

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन जुबैर (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हुमा) हर नमाज़ के बाद सलाम फेरकर ये कलिमात कहते थे एक अल्लाह के सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं, उसका कोई शरीक नहीं, हुकूमत और बादशाहत उसी की है और वही शुक्र व हम्दो सना का हक़दार है और वही हर चीज़ पर क़ादिर है, गुनाहों से बचने की तौफ़ीक़ व नेकी करने की कुव्वत अल्लाह ही से मिलती है और उसके सिवा कोई माअ़बूद नहीं है, हम उसके सिवा किसी की बन्दगी नहीं करते हर तरह की नेअ़मत और सारा फ़ज़्लो करम उसी का है, खूबसूरत ताअ़रीफ़ का सज़ावार वही है, हम उसके लिये दीन में इख़लास रखने वाले हैं और कहा कि रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) हर नमाज़ के बाद बुलन्द आवाज़ से ''लाइलाहा इल्लल्लाह'' कहा करते थे (मुस्लिम–सहीह–1/652–ह०-1343)

अ़मल में इख़लास तो साबिक़ा गुनाह मुआ़फ़

➡ हज़रत अबू हुरैरा (रज़िअल्लाहु तअ़ाला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जो शख्स ईमान व इख़लास और सवाब की नीयत से रोज़े रखे तो उस के साबिक़ा गुनाह मुआ़फ़ कर दिये जाते हैं जो शख़्स ईमान व इख़लास और सवाब की नीयत से रमज़ान में

क़याम करे तो उसके साबिक़ा गुनाह मुआ़फ़ कर दिये जाते हैं जो शख़्स ईमान व इख़्लास और सवाब की नीयत से शबे क़द्र का क़याम करे तो उसके साबिक़ा गुनाह मुआ़फ़ कर दिये जाते हैं।
(मिश्कात–1/640–ह०-1958)

जो शोहरत के लिये कोई काम करे तो अल्लाह उसकी शोहरत करा देगा

➡ हज़रत जुन्दुब (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर‘वी है कि हुज़ूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि जो शख़्स शोहरत के लिये काम करेगा तो अल्लाह तआ़ला लोगों में उसकी शोहरत करवा देगा और जो कोई दिखावे के लिये काम करेगा तो अल्लाह तआ़ला उसका दिखावा ज़ाहिर कर देगा। (इब्ने हिब्बान–सहीह–1/538–ह०-406)

–: ख़ालिस इ़बादात का सिला जन्नत :–

➡ हज़रत अनस (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर‘वी है कि हुज़ूर नबी करीम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि क़यामत के क़रीब मेरी उम्मत तीन फ़िरक़ों में हो जायेगी एक फ़िरक़ा ऐसा होगा जो इख़्लास के साथ अल्लाह तआ़ला की इ़बादत करेगा और एक फ़िरक़ा ऐसा होगा जो अल्लाह तआ़ला की इ़बादत दिखावे के लिये करेगा और एक फ़िरक़ा ऐसा होगा जो अल्लाह तआ़ला की इ़बादत लोगों से खाने का ज़रिया बनाने के लिये करेगा क़यामत के दिन अल्लाह तआ़ला लोगों को जमाअ़ करेगा तो जो लोगों से खाने के लिये इ़बादत करता था तो अल्लाह तआ़ला

उससे फ़रमायेगा मुझे मेरी इ़ज़्ज़त व जलाल की क़सम तूने मेरी इ़बादत का इरादा नहीं किया था तो वो कहेगा कि हाँ मैं उसके ज़रिये लोगों से खाता था तो अल्लाह तआ़ला फ़रमायेगा कि तूने कोई शैः जमाअ़ ही नहीं की जो तुझे नफ़ाअ़ देती और तुझे कोई भी नफ़ाअ़ नहीं मिलेगा जिसकी तू उम्मीद रखता था फिर फ़रिश्तों को हुक्म होगा कि इसको दोज़ख़ की तरफ़ ले जाओ फिर जिसने लोगों को दिखाने के लिये इ़बादत की थी तो अल्लाह तआ़ला उससे फ़रमायेगा कि तेरा कोई अ़मल पेश नहीं हुआ फिर फ़रिश्तों को हुक्म होगा कि इसको दोज़ख़ की तरफ़ ले जाओ फिर जो इख़लास के साथ अल्लाह तआ़ला की इ़बादत करता था अल्लाह तआ़ला उससे फ़रमायेगा तूने मेरी इ़बादत करने में क्या इरादा किया था वो अ़र्ज़ करेगा कि तेरी इ़ज़्ज़त व जलाल की क़सम तू उस बात को मुझसे ज़्यादा जानता है मैंने तो तेरी याद और तेरी रिज़ा के लिये इ़बादत की थी फिर अल्लाह तआ़ला फ़रमायेगा कि मेरे बन्दे ने सच कहा इसको जन्नत की तरफ़ ले जाओ।
(तबरानी–मुअ़जम औसत–4/102–ह०-5105)
(बैहक़ी–शुअ़बुल ईमान–5/289–ह०-6808)

➡ हज़रत अबू दरदा (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से रिवायत है कि नबी अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला की इ़बादत को ख़ालिस करलो और पंज वक़्ता नमाज़ क़ायम करो और खुशी से अपने माल की ज़कात अदा करो व रमज़ान के रोज़े रखो और बैतुल्लाह का हज करो और अपने रब की जन्नत में दाख़िल हो जाओ।
(कंज़ुल उ़म्माल–2/34–ह०-5259)

हर हाल में अपने रब को राज़ी करना हर मुसलमान पर फ़र्ज़ है

अल्लाह तआ़ला हमें जिस हाल में भी रखे उस हाल में राज़ी रहना और उसकी हर अ़ता पर उसके शुक्र गुज़ार रहना ये मोमिन की अ़लामत है ख़्वाह वो हमें तकलीफ़ो परेशानी में रखे या राहत व मसर्रत में रखे ख्वाह तंगी हो या फ़राख़ी और आसानी हो या दुश्वारी ग़रज़ ये कि अपने तमाम दीनी व दुनियावी मुआ़मलात में अल्लाह तआ़ला की रिज़ा व खुशनूदी के तालिब रहें और जो भी अ़मल करें तो उसका मक़सूद मख़लूक़ को राज़ी व खुश करना और ताअ़रीफ़ व शोहरत हासिल करने के लिये न हो बल्कि ख़ालिस अल्लाह तआ़ला को राज़ी व खुश करने के लिये हो यही हम सबके हक़ में बेहतर और बाइसे ख़ैर है और दुनिया व आख़िरत में कामयाबी व कामरानी और निजात का बाइस है

जब हम अपने तमाम आअ़माल में अल्लाह तआ़ला की रिज़ा को मक़सूद रखेंगे तो अल्लाह तआ़ला हमारे गुनाहों को मुआ़फ़ फ़रमायेगा और अ़ज़ाब से महफ़ूज़ रखेगा और अ़ज़ीम मरातिब और इनाअ़मात व इकराम से नवाज़ेगा और जन्नत में दाख़िल फ़रमायेगा अल्लाह तआ़ला की दिलों में मुहब्बत और उसकी रिज़ा ईमान की रुह है और जिनका काम अल्लाह तआ़ला की रिज़ा व खुशनूदी हासिल करने के लिये ख़ालिस होता है तो अल्लाह तआ़ला उन्हें अपना कुर्ब व अपना ख़ास फ़ज़्लो करम अ़ता फ़रमाता है और बन्दे के हालात कैसे भी हों मगर उसके लिये निहायत ज़रुरी है कि वो हर हाल में अपने रब से राज़ी रहे व अपने रब को राज़ी करने

के लिये कसरत से खुलूस के साथ नेक आअ़्माल करें और अपनी तमाम उ़म्र उसे राज़ी करने के लिये सर्फ़ करदे और इसी को अपनी ज़िन्दगी का अहम मक़्सद बनाले अगर कोई शख़्स अ़मल में ग़ैर की रिज़ा हासिल करना मक़्सूद रखे तो वो अ़मल फ़ासिद और अकारत हो जाता है और उसकी सारी मेहनत व मशक़्क़त ज़ाए हो जाती है जो उसने उस अ़मल के करने में की उठाई थी और उसे कोई जज़ा या नफ़ाअ़ हासिल नहीं होगा और उस अ़मल के सबब मिलने वाले अज्र से महरुम रहेगा पस जिस अ़मल से हमारा रब राज़ी व खुश हो उस अ़मल को ज़रुर करें और जिस अ़मल से हमारा रब नाराज़ हो उस अ़मल को मुत्लक़न तर्क कर दें

जिनकी ज़िन्दगी अल्लाह तआ़ला की इताअ़त व इ़बादत और रिज़ाये इलाही के हुसूल के लिये गुज़री तो उनसे अल्लाह तआ़ला राज़ी हो जाता है और वो उन्हें अपने मुक़र्रब बन्दों में शामिल फ़रमाता है और उनकी जज़ा जन्नत है जिसमें वो हमेशा रहेंगे।

इरशादे बारी तआ़ला हैः–

बेशक जो लोग ईमान लाये और नेक अ़मन करते रहे वही लोग सारी मख़्लूक़ से बेहतर हैं उनकी जज़ा उन के रब के हुज़ूर दायमी रिहायश के बाग़ात हैं जिनके नीचे नहरें र‘वां हैं उनमें वो हमेशा हमेशा रहेंगे अल्लाह उनसे राज़ी हो गया है और वो लोग उस (अल्लाह) से राज़ी हैं ये (मक़ाम) उस शख्स के लिये है जो अपने रब से ख़ायफ़ रहा। (सूरह–बय्यिना–98/7,8)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–

ऐ इत्मीनान पा जाने वाले नफ़्स तू अपने रब की तरफ़

इस हाल में लौट आ कि तू उससे राज़ी है और वो तुझसे राज़ी है पस तू मेरे कामिल बन्दों में शामिल हो जा और मेरी जन्नत में दाख़िल होजा।
(सूरह–फ़ज्र–89/27 ता 30)

इरशादे बारी तआ़ला हैः–
अल्लाह फ़रमायेगा ये ऐसा दिन है (जिसमें) सच्चे लोगों को का सच उन्हें फ़ायदा देगा उनके लिये जन्नतें हैं कि जिनके नीचे नहरें जारी हैं वो उनमें हमेशा हमेशा रहने वाले हैं अल्लाह उनसे राज़ी हो गया और वो उससे राज़ी हो गये यही (रज़ाये इलाही) सबसे बड़ी कामयाबी है। (सूरह–मायदा–5/119)

अल्लाह तआ़ला के राज़ी होने का माअ़नी है बन्दों ने दुनिया में जो खुलूस के साथ नेक आअ़माल किये और अल्लाह तआ़ला की इताअ़त व इबादत पर गामज़न रहे तो अल्लाह तआ़ला उनके आअ़माल से राज़ी हो गया और बन्दों के राज़ी होने का माअ़नी ये है कि बन्दों ने जो आअ़माल किये तो अल्लाह तआ़ला ने उनको कुबूल कर लिया, उनको सवाब अ़ता किया और उनके गुनाहों को मुआ़फ़ कर दिया व आख़िरत में इनआ़म व इकराम से नवाज़ना और जन्नत में दाख़िल करना पस बन्दे उससे खुश हो गये और अल्लाह तआ़ला का इब्तिदाई इनआ़म जन्नत है व इन्तिहाई इनआ़म रब की रिज़ा है

अल्लाह तआ़ला की रिज़ा जोई के लिये माल ख़र्च करना

इरशादे बारी तआ़ला हैः–
और उस आग से उस बड़े परहेज़गार शख़्स को बचा

लिया जायेगा जो अपना माल अल्लाह की राह में देता है कि (अपनी जान व माल की) पाकीज़गी हासिल करे और किसी पर उसका कोई एहसान नहीं कि जिसका बदला दिया जा रहा हो मगर वो सिर्फ़ अपने रब की रिज़ा जोई के लिये (माल ख़र्च कर रहा है) और अ़न-क़रीब वो (अल्लाह की अ़ता से और अल्लाह उसकी वफ़ा से) राज़ी हो जायेगा। (सूरह-लैल-92/17-21)

इरशादे बारी तआ़ला हैः-

और तुम जो माल भी ख़र्च करो सो वो तुम्हारे अपने फ़ायदे के लिये है और अल्लाह तआ़ला की रिज़ा जोई के सिवा तुम्हारा ख़र्च करना मुनासिब ही नहीं और तुम जो माल ख़र्च करोगे (उसका अज्र) तुम्हें पूरा पूरा दिया जायेगा और तुम पर कोई जुल्म नहीं किया जायेगा। (सूरह-बक़राह-2/272)

इरशादे बारी तआ़ला हैः-

और जो लोग अपना माल अल्लाह तआ़ला की रिज़ा हासिल करने और अपने आप को (ईमान व इताअ़त पर) मज़बूत करने के लिये ख़र्च करते हैं उनकी मिसाल एक ऐसे बाग़ की सी है जो ऊँची सतह पर हो उस पर ज़ोरदार बारिश हो तो वो दो गुना फल लाये और अगर उसे ज़ोरदार बारिश न मिले तो उसे शबनम भी काफ़ी हो और अल्लाह तआ़ला तुम्हारे आअ़माल को खूब देखने वाला है। (सूरह-बक़राह-2/265)

जो लोग रिज़ाये इलाही के हुसूल के लिये इख़लास के साथ राहे खुदा में माल ख़र्च करते हैं और उसमें ज़र्रा बराबर भी दुनियावी नफ़ाअ़ हासिल करने की ग़रज़ न हो तो अल्लाह तआ़ला बेहतर सिला अ़ता फ़रमाता है।

रिज़ाये इलाही के लिये नेक अ़मल करने वाले की दुआ़ कुबूल होती है

➡ हज़रत अ़ब्दुल्लाह बिन ऊ़मर (रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु) से मर‘वी है कि रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु तआ़ला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने फ़रमाया कि एक बार तीन आदमी कहीं जा रहे थे कि उन्हें बारिश ने आ लिया तो वो पहाड़ की ग़ार में घुस गये फिर ग़ार के मुँह पर एक बहुत बड़ी चट्टान आ गिरी जिससे उसका मुँह बन्द हो गया फिर उन्होंने एक दूसरे से कहा तुमने जो नेक काम किये हैं उनमें से जो ख़ालिस अल्लाह के लिये किये है उसे ज़हन में लाओ फिर उसके वसीले से अल्लाह तआ़ला के हुजूर दुआ़ करो मुम्किन है कि अल्लाह तआ़ला ग़ार को खोल दे

चुनांचा एक ने कहा ऐ अल्लाह मेरे वालिदैन बूढ़े थे और मेरे छोटे छोटे बच्चे भी थे मैं उनके लिये बकरियाँ चराता था पस जब मैं शाम को उनके पास आता तो बकरियों का दूध निकालकर अपने वालिदैन से उसकी इब्तिदा करता उसके बाअ़द अपने बच्चों को पिलाता था एक दिन दरख़्तों की तलाश में मैं बहुत दूर चला गया और शाम को बहुत देर से घर आया मैंने वालिदैन को देखा वो सो गये थे पस मैंने हस्बे माअ़मूल दूध निकाला फिर ताज़ा दूध लेकर वालिदैन के सिरहाने खड़ा हो गया मुझे ये गवारा न था कि उन्हे बेदार करूँ और ये भी पसंद नहीं था कि मैं उनसे पहले अपने बच्चों को दूध पिलाऊँ तो ऐ अल्लाह अगर ये अ़मल मैंने तेरी रिज़ा के लिये किया था तो हमारे लिये कुछ रास्ता खोल दे ताकि हम आसमान देख सकें चुनांचा अल्लाह तबारक–

व तआ़ला ने उनके लिये इतनी कुशादगी पैदा कर दी कि वो आसमान देख सकें।

फिर दूसरे ने कहा ऐ अल्लाह मेरी एक चचाज़ाद बेटी थी जिससे मैं बहुत मुहब्बत करता था जिस तरह लोग औ़रतों से मुहब्बत करते हैं मैंने उससे उसके नफ़्स का मुतालबा किया तो उसने इन्कार कर दिया वो सिर्फ़ इस शर्त पर राज़ी हुई कि मैं उसे सौ दीनार दूँ मैंने दौड़ धूप करके दीनार जमाअ़ किया और उन्हें लेकर उसके क़रीब गया तो उसने कहा अल्लाह के बन्दे अल्लाह से डर और ऐसा काम न कर चुनांचा मैं ये सुनकर उससे अलग हो गया ऐ अल्लाह अगर मैंने ये अ़मल महज़ तेरी रिज़ा के लिये किया था तो हमारे लिये कुछ और कुशादगी पैदा करदे तो अल्लाह तआ़ला ने उनके लिये कुछ मज़ीद कुशादगी पैदा फरमां दी

फिर तीसरे शख़्स ने कहा ऐ अल्लाह मैंने एक मज़दूर को कुछ चावल की मज़दूरी पर रखा था तो जब उसने अपना काम पूरा कर लिया तो कहा कि मुझे मेरा हक़ दो मैंने उसका हक़ पेश कर दिया लेकिन वो छोड़ कर चला गया उसके बाअ़द मैं उससे खेती करता रहा हत्ता कि मैंने उससे बैल गायें और एक चरवाहा ख़रीद लिया कुछ मुद्दत के बाअ़द वो मज़दूर मेरे पास आया और कहा मेरा हक़ मुझे वापस करदें मैंने कहा ये बैल गायें और चरवाहा सब ले जाओ चुनांचा वो सब लेकर चला गया पस ऐ अल्लाह अगर मैंने ये अ़मल तेरी रिज़ा के लिये किया था तो जो रुकावट बाक़ी रह गई है उसे भी खोल दे चुनांचा अल्लाह तआ़ला ने बाक़ी पत्थर उनसे हटा दिया। (बुख़ारी–सहीह–5/573–ह०-5974)
(मुस्लिम–सहीह–5/212–ह०-6949)

लोगों को नाराज़ करके अल्लाह को राज़ी करना

➡ रसूले अकरम (सल्लल्लाहु तआ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) ने इरशाद फ़रमाया कि जिस शख़्स ने लोगों की नाराज़गी के बावुजूद अल्लाह तआ़ाला की रिज़ा व खुशनूदी तलाश की तो लोगों में जो उसके लिये गुस्सा होगा तो अल्लाह तआ़ाला उस गुस्से में किफ़ायत करेगा और जो लोग उसको तकलीफ़ देना चाहेंगे तो अल्लाह तआ़ाला उस तकलीफ़ से भी उसको बचायेगा और जो शख़्स अल्लाह तआ़ाला को नाराज़ करके लोगों को राज़ी करेगा तो अल्लाह तआ़ाला उसे लोगों के सुपुर्द कर देगा और अल्लाह तआ़ाला लोगों को उसको तकलीफ़ देने के लिये मुक़र्रर कर देगा और अल्लाह तआ़ाला उस शख़्स से अपनी अमान उठा लेता है और लोगों के गुस्से व तकलीफ़ देने के मुआ़ामले में अपनी मदद और नुसरत नहीं फ़रमाता। (तिर्मिज़ी–सुनन–2/238–ह०-2414)

अल्लाह तआ़ाला की रिज़ा के लिये सब्र करने का सिला

इरशादे बारी तआ़ाला हैः–

और अपना खाना अल्लाह की मुहब्बत में मोहताज व यतीम और क़ैदी को खिला देते हैं (और कहते हैं) कि हम तो महज़ अल्लाह की रिज़ा के लिये खिला रहे हैं न तुमसे किसी बदले के ख़्वाहिश मंद हैं और न शुक्र गुज़ारी के (ख़्वाहिश मंद) हैं हमें तो अपने रब से उस दिन का ख़ौफ़ रहता है जो चेहरों को (निहायत) सियाह और बदनुमा करने वाला है पस अल्लाह तआ़ाला उन्हें उस दिन की सख़्ती से बचा लेगा और उन्हें रौनक व

ताज़गी और सुरुर व मसर्रत बख़्शेगा और इस बात के ऐवज़ कि उन्होंने सब्र किया तो (रहने को) जन्नत और (पहनने को) रेशमी पोशाक अ़ता करेगा और ये लोग उसमें तख़्तों पर तकिये लगाये बैठे होंगे न वहाँ वो धूप की तपिश पायेंगे और न सर्दी की शिद्दत और जन्नत के दरख़्तों के साये उन पर झुक रहे होंगे और उनके मेवों के गुच्छे झुक कर लटक रहे होंगे व खुद्दाम उन के गिर्द चांदी के बर्तन व साफ़ सुथरे शीशे के गिलास लिये फिरते होंगे और शीशे भी चांदी के बने होंगे कि जिन्हें उन्होंने हर एक की तलब के मुताबिक़ ठीक ठीक अन्दाज़ से भरा होगा और उन्हें वहाँ शराबे तहूर के ऐसे जाम पिलाये जायेंगे जिनमें ज़न्जबील की आमेज़िश होगी और ज़न्जबील जन्नत में ऐसा चश्मा है जिसका नाम सलसबील रखा गया है और उनके इर्द गिर्द ऐसे मासूम बच्चे घूमते रहेंगे जो हमेशा उसी हाल में रहेंगे जब आप उन्हें देखेंगे तो उन्हें बिखरे हुये मोती गुमान करेंगे और जब आप बहिश्त पर नज़र डालेंगे तो वहाँ कसरत से नेअ़मतें और हर तरफ़ बड़ी सल्तनत देंखेगे और उनके जिस्मों पर बारीक रेशम के सब्ज़ व दबीज याअ़नी मोटे रेशम के कपड़े होंगें और उन्हें वहाँ चाँदी के कंघन पहनाये जायेंगे और उनका रब उन्हें पाकीज़ा शराब पिलायेगा कि बेशक ये तुम्हारा सिला होगा और तुम्हारी मेहनत मक़बूल हो चुकी।
(सूरह–दहर/इन्सान–76/08-22)

इरशादे बारी तअ़ाला हैः–

और जो लोग अपने रब की रिज़ा जोई के लिये सब्र करते हैं और नमाज़ क़ायम रखते हैं और जो रिज़्क़ हमने उन्हें दिया है उसमें से पोशीदा व ऐलानियां ख़र्च करते हैं और नेकी के ज़रिये बुराई को दूर करते हैं–

यही वो लोग हैं जिनके लिये आख़िरत का (हसीन) घर है जहाँ सदाबहार बाग़ात हैं उनमें वो लोग दाख़िल होंगे और उनके आबा व अजदाद और उनकी बीवियों और उनकी औलाद में जो भी नेकोकार होगा और फ़रिश्ते उनके पास जन्नत के हर दरवाज़े से आयेंगे और कहेंगे तुम पर सलामती हो सब्र करने के सिले में आख़िरत का घर क्या खूब है। (सूरह–राअ़द–13/22 ता 24)

मुसलमानों पर वाजिब है कि सिर्फ़ और सिर्फ़ अल्लाह तआ़ला की रिज़ा के हुसूल के लिये इख़लास के साथ अपने तमाम आअ़माल अन्जाम दें और उनकी बेहतर जज़ा की उम्मीद भी अल्लाह तआ़ला से रखें व लोगों से किसी क़िस्म की कोई तवक़्क़ौ न रखें और अपने आअ़माल लोगों को दिखाना व अपनी वाहवाही चाहना या किसी पर उसका एहसान जताना या उसकी तरफ़ से कोई बदला हासिल करना मक़सूद न हो और लोगों की तरफ़ से शुक्रिया या ताअ़रीफ़ का लालच न रखें बल्कि अल्लाह तआ़ला की तरफ़ से सवाब की उम्मीद रखें क्योंकि रियाकारी पर मुश्तमिल तमाम आअ़माल शिर्के ख़फ़ी, मज़मूम बातिल और नामक़बूल और बाइसे हलाकत और फ़ित्ना–ए–दज्जाल हैं जो अल्लाह तआ़ला के ग़ज़ब और उसके अ़ज़ाब का बाइस बनेंगे

इसलिये मुसलमानों को चाहिये कि अपने आअ़माल को हर हाल व हर सूरत में रियाकारी से महफ़ूज़ रखें ताकि हमारी मेहनतो मशक़्क़्त और राहे खुदा में माल के इख़राजात में जो हमने नेकियाँ कमाई हैं ज़ाए और बर्बाद न हों और अज्रो सवाब के नाम पर हमारे हाथ कुछ भी न आये और हम खाली हाथ रह जायें और रियाकारी के सबब दोज़ख़ का ईधन बनें फिर हम पर

सख़्त तरीन दर्दनाक अ़ज़ाब मुसल्लत किया जाये पस हम ये कोशिश करें कि हत्तल इमकान पोशीदा तौर पर सिर्फ़ अपने रब को राज़ी करने के लिये अ़मल करें और इस मुआ़मले में मख़्लूक़ से क़ताअ़ तआ़ल्लुक़ हो जायें हालांकि हम जानते हैं कि 'ला इलाहा इल्लल्लाह' अल्लाह के सिवा कोई इ़बादत के लायक़ नहीं और वो वाहदहू ला शरीक है उसका कोई शरीक नहीं और हम ये जानते हैं फिर हम क्यों भूल जाते हैं कि हर इ़बादत अल्लाह तआ़ला के सिवा किसी के लिये नहीं है फिर हम अपनी इ़बादत मख़्लूक़ को क्यों दिखायें कि जो न हमारा भला कर सकती है न बुरा और न हमें अज्रो सवाब दे सकती है और न ही क़ब्र के अ़ज़ाब से बचा सकती है न क़यामत के अ़ज़ाब व उसकी हौलनाकियों से तहफ़्फ़ुज़ दे सकती है और न ही दोज़ख़ में जाने से वो रोक सकती है और न हमें जन्नत में दाख़िल कर सकती है तो जब मख़्लूक़ हमारा कुछ भला नहीं कर सकती तो फिर हम ऐसी मख़्लूक़ को अपने आअ़माल का मुज़ाहरा करके अपने आअ़माल को क्यों बर्बाद करें क्या हम बेअ़क़्ल और बेवक़ूफ़ है जो खुद को दोज़ख की आग का ईंधन बना रहे हैं

अल्लाह तआ़ला ही है जो बड़ी शान व अ़ज़मत वाला है नफ़ाअ़ व नुक़सान, इ़ज़्ज़त व ज़िल्लत और पस्ती व बुलन्दी देने वाला, मारने व जिलाने वाला, जहन्नम से निजात देने वाला और जन्नत में दाख़िल करने वाला, अज्रो सवाब व अ़ज़ाब देने वाला, कायनात के निज़ाम को तन्हा चलाने वाला व सबको रिज़्क़ देने वाला और हर पोशीदा व ज़ाहिर का जानने वाला दिल की रग से भी ज़्यादा क़रीब, रोज़े क़यामत मीज़ान लगाने वाला वो अ़ज़ीम पाक ज़ात है कि जिसकी हर शैः तस्बीह और–

ज़िक्र करती है और तमाम कायनात का अकेला मालिक व मुख़्तार है उसका कोई शरीक नहीं वो हमेशा से है और हमेशा रहेगा तो फिर हम अपने आअ़्माल लोगों को क्यों दिखायें और अल्लाह तआ़ला के ग़ज़ब और उसके अ़ज़ाब के मुस्तहिक़ बनें पस हमें चाहिये कि हम अल्लाह तआ़ला की पाक ज़ात व आ़ली सिफ़ात और उसकी शानो अ़ज़मत की माअ़रिफ़त हासिल करें ताकि हमारे आअ़्माल व इताअ़त में इख़्लास पैदा हो और रियाकारी मुकम्मल तौर पर तर्क हो जाये और मख़्लूक़ के लिये अ़मल करने की बजाए अपने मालिको मुख़्तार पाक पर'वर दिगार को राज़ी करने के लिये नेक अ़मल करें और अपने नफ़्स से जिहाद करें ताकि वो लोगों से मिलने वाली ताअ़रीफ़ व तौसीफ़ की ख़्वाहिश पर न उभारे दिलों में अल्लाह तआ़ला व आख़िरत के अ़ज़ाब खौफ़ रखें ताकि किसी तरह दिल में रियाकारी दाख़िल न होने पाये

बिला शुबा जब कोई बन्दा अपने अ़मल का दिखावा करता है और उससे लोगों की रिज़ा व ख़ुशनूदी चाहता है तो अल्लाह तआ़ला उससे नाराज़ व ग़ज़बनाक हो जाता है इसलिये लोगों की ताअ़रीफ़ व मज़म्मत से बे-पर'वाह होकर ख़ालिस अल्लाह तआ़ला के लिये अ़मल करें क्योंकि लोगों की ताअ़रीफ़ व मज़म्मत से हमें कोई नफ़अ़ या नुक़सान नहीं पहुँचता लेकिन अल्लाह तआ़ला नाराज़ व ग़ज़बनाक हो जाये तो सोचो अल्लाह तआ़ला क्या कुछ नहीं कर सकता अल्लाह तआ़ला हर शैः पर कामिल कुदरत रखने वाला बड़ा मेहरबान निहायत रहम फ़रमाने वाला है अल्लाह तआ़ला हम सबको रियाकारी तर्क करके इख़्लास के साथ अ़मल करने की तौफ़ीक़ मरहम्त फ़रमाये। आमीन ★★★★★

अल्ह़म्दुलिल्लाहि रब्बिल अ़ालमीन अल्लाह तअ़ाला का लाख लाख शुक्र व एहसान है कि जिसके फ़ज़्लो करम व तौफ़ीक़ से और उसके हबीब नबी करीम (सल्लल्लाहु तअ़ाला अ़लैहि व आलिहि वसल्लम) की इ़नायत और रहमो करम और अह्ले बैत अत्हार के फ़ैज़ व नज़रे करम व तमाम सहाबा किराम व जुमला औलियाकिराम के फ़ैज़े रुहानी व बरकात से इस फ़क़ीर ने इस किताब की तालीफ़ की है अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त ने मुझ हक़ीर सरापा तक़सीर से जो काम लिया है हक़ीक़तन मैं क़तई इसके क़ाबिल न था अल्लाह तअ़ाला इस किताब को अपनी बारगाह में शरफ़े मक़बूलियत अ़ता फ़रमाये और क़यामत तक लोगों के लिये इस किताब को फ़ैज़ रसाँ रखे और मेरी ज़िन्दगी व आख़िरत ईमान बिल ख़ैर पर क़ायम रखे व तमाम उम्मते मुस्लिमा को हिदायत अ़ता फ़रमाये और अपनी व अपने हबीब और अहले बैत अत्हार व सालिहीन की मुहब्बत से दिलों को मुनव्वर और मुनज़्ज़ाह फ़रमाये और क़ल्ब व रुह को मुज़य्यन फ़रमायें और तमाम मुहिब्बाने अहले बैत की मग़फ़िरत फ़रमाये– **आमीन**

और इस किताब को बराये ईसाले सवाब मुअ़ल्लिफ़ के वालिदे गिरामी मरहूम जनाब ईद मुहम्मद वारसी साहब की रुह को अज्रे अ़ज़ीम अ़ता फ़रमाये व अपने हबीब के सद्क़े उनकी मग़फ़िरत फ़रमाये–**आमीन**

नोट– जो हज़रात अपने अ़ज़ीज़ो अक़ारिब या अपने वालिदैन के ईसाले सवाब या दीनी तबलीग़ या सवाब पाने की नीयत से इस किताब को छपवाकर लोगों में तक़सीम करना चाहते हैं वो बराहे रास्त हम से राब्ता क़ायम करें। 9897626182, 9045442223



डा० आज़म बेग क़ादरी
Mob-09897626182

ISBN 978-93-5759-780-7